तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

सितंबर 2020 रु.5/-

श्रीहरि ब्रह्मोत्सव का विशेषांक

२३-०९-२०२०
बुधवार
रात - गरुडवाहन

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२० सितंबर १९ से २७ तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२० सितंबर
१९ से २७ तक

१९-०९-२०२० शनिवार
दिन - ध्वजारोहण

१९-०९-२०२० शनिवार
रात - महाशेषवाहन

२०-०९-२०२० रविवार
दिन - लघुशेषवाहन

designpsivaprasad

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥
(- श्रीमद्भगवद्गीता १-१४)

इसके अनन्तर सफेद घोडों से युक्त उत्तम रथ में बैठे हुए श्रीकृष्ण महाराज और अर्जुन ने भी अलौकिक शङ्ख बजाये।

श्री वेंकटेश्वराष्टकम् नरकण्ठीरवशास्त्रिकृतम्

ओं तत्सत्पदनिर्देश्यं जगज्जन्मादिकारणम्।
अनन्तकल्याणगुणं वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥१॥

नतामरशिरोरत्नरञ्जितश्रीपदाम्बुजम्।
प्रावृषेण्यघनश्यामं वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥२॥

मोहादिषडरिव्यूहग्राहाकुलभवार्णवे।
मज्जतां तरणिं नृणां वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥३॥

नाथं त्रिजगतामेकं साधुरक्षणदीक्षितम्।
श्रीशेषशैलनिलयं वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥४॥

राजद्राजीवपत्रश्रीमदमोचनलोचनम्।
मन्दहासलसद्वक्त्रं वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥५॥

यन्मुखेन्दुस्मितज्योत्स्ना भूयसीं तमसां ततिम्।
विधुनोति प्रपन्नानां वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥६॥

णान्तस्य कस्यचिद्वाक्यं शब्दस्यानन्यवाचिनः
ब्रह्मरुद्रेन्द्रजनकं वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥७॥

यद्वक्षःस्थलमध्यास्य भाति श्रीरनपायिनी।
तटिल्लेखेवाभ्रगर्भे वन्दे श्रीवेंकटेश्वरम् ॥८॥

वेंकटेशाष्टकमिदं नरकण्ठीरवोदितम्।
यः पठेत्सततं भक्त्या तस्मै विष्णुः प्रसीदति॥

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका (तेलुगु, तमिल, हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नडा, संस्कृत)

घर-घर तक 'सप्तगिरि'! यह श्री बालाजी की अक्षर संपत्ति!

कलियुग प्रत्यक्ष दैव श्री बालाजी के दिव्य वैभव को

हर महीने... सप्तगिरि पत्रिका में देखिए... पढाइये...

भगवानजी का दर्शन के लिए
अनेक उपाय व साधन है।
कदम-कदम पर प्रणाम स्वीकारने वाले,
आर्तत्राण परायण भगवान की कुछ लोग पुष्पार्चना करते हैं...
कुछ लोग अक्षर पुष्पों से आराधना करते हैं।

श्रीवारि के अक्षर प्रसाद 'सप्तगिरि' को
पढ़ें और पढायें, यह भी उनकी एक सेवा हैं।

हर महीने... 'सप्तगिरि' पढे... अपने रिश्तेदारों से पढायें!
हर महीने अपने घर में ही भगवानजी के दर्शन कर लीजिए...
तिरुमल संबंधित विशेषताएँ जान लें।

'सप्तगिरि' की अभिवृद्धि में भाग लीजिए।
सप्तगिरि मासिक पत्रिका को चंदा भरिये, भराइये।

चंदा विवरण

एक प्रति...	रु. ५.००
वार्षिक चंदा...	रु. ६०.००
जीवन चंदा...	रु. ५००.००
विदेशियों को वार्षिक चंदा...	रु. ८५०.००

सूचना - संस्कृत भाषा के जीवन चंदा की सुविधा नही है।
केवल वार्षिक चंदा मात्र ही उपलब्ध है।

'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका के बारे में
अन्य विवरण केलिए कार्यकालीन
समयों में संपर्क करें - दूरभाष :
कार्यालय - ०८७७-२२६४५४३
डी.टी.पी. अनुभाग - ०८७७-२२६४३५९
संपादक - ०८७७-२२६४३६०

कार्यालय का पता -
प्रधान संपादक
'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका कार्यालय
ति.ति.दे प्रेस कांपौंड,
के.टी.रोड, तिरुपति - ५१७ ५०७.

सूचना, सुझाव व शिकायतों के लिए संपर्क करें-
sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५१ सितंबर-२०२० अंक-०४

विषयसूची

कलियुग वैकुण्ठ में ब्रह्मोत्सव वैभव	आचार्य वाई.वेंकटरमण राव	07
श्री वेंकटेश सुप्रभात	श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी	13
अनंत पद्मनाभ व्रत	डॉ.जी.सुजाता	18
श्री वेंकटेश्वर का अवतार रहस्य	श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया	22
नाम स्मरण का महत्व	श्री के.रामनाथन	25
कलियुग का कल्पवृक्ष श्री वेंकटेश्वर	डॉ.के.सुधाकर राव	31
श्री नारायण कवच	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	34
श्री वेंकटेश के यशोमुकुट	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	39
जीवन चक्र का अभिन्न अंग है श्राद्ध	डॉ.राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'	46
नायनाराच्चान्पिल्लै	श्री अनुज कुमार अगर्वाल	49
श्री पेरियवाच्चान पिळ्ळै	श्रीमती शकुंतला उपाध्याय	50
राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	53

सूचना

इस अंक में धारावाहिक लेखों का प्रचुरण नहीं किया जा रहा है।

- प्रधान संपादक

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस्.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
आचार्य के.राजगोपालन्

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

मुखचित्र - **गरुडवाहनारूढ़ श्री मलयप्पस्वामी (तिरुमल)।**
चौथा कवर पृष्ठ - **चक्रस्नान (तिरुमल)।**

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

ब्रह्मांडनायक के ब्रह्मोत्सव

कलियुगेश भगवान बालाजी बहुत उत्सव-प्रिय है! यथा, वह अलंकार-प्रिय भी है! दिनोत्सव, वारोत्सव, पक्षोत्सव तथा मासोत्सव का बालाजी श्री वेंकटेश्वर महा प्रिय देवता है। तभी तो, संसार-प्रसिद्ध श्री तिरुमलगिरि दिव्य-क्षेत्र पर हरदम श्रीस्वामी के उत्सवों का धूम-धमाका चलता रहता है, जिस महा वैभव से आकर्षित हो, विश्वभर से भक्तलोग इन सप्तगिरियों पर चले आ जाते हैं!!

इन उत्सवों की श्रृंखला में इस महीने भाद्रपदमाह के अंतर्गत तिरुमल श्रीहरि के ब्रह्मोत्सव मनाये जाते हैं। ''ब्रह्मोत्सव'' का तात्पर्य बड़े उत्सव! बड़े पैमाने पर मनाये जाने वाला संरंभ!! - मगर फिर भी, ब्रह्मोत्सवों का अर्थ कुछ और भी है - ब्रह्म यानी ब्रह्मदेव के द्वारा मनाये जाने वाला उत्सव!!

१७वीं सदी की, इसी चित्तूर जिले की ''तरिगोंडा'' नाम के गाँव की वासिनी, जिसने अपने पति के मरणानंतर साक्षात् तिरुमल श्रीवेंकटेश के सन्निधान में आ बसी और अपने आराध्य श्रीनिवास का इतिहास लिखा था, 'तरिगोंडा वेंगमांबा' ने अपने ''श्रीवेंकटाचल-माहात्म्यम्'' में ठीक ही लिखा था कि तिरुमलगिरियों पर सर्व प्रथम सिरजन हार ब्रह्मदेव ने ही उत्सव मनाने का श्रीगणेश किया था। ब्रह्म से मनाये जाने के कारण ही इन उत्सवों को ''ब्रह्मोत्सव'' कहने लगे!

आर्ष-विरोधी, लोककंटक, वैदिकधर्म के शत्रु-राक्षसों का श्रीमन्महाविष्णु ने संहार किया था-हर युग में। इसके लिए उसने अनेक अवतार धरे! कृतयुग से लेकर द्वापरयुग तक यह राक्षस-संहार चलता रहा, मगर द्वापर-तक जो राक्षस मरने से बच गये, वे कलियुग में प्रवेश कर गये! कलियुग में धर्म-देवता का एक ही चरण था! ऊपर से इन राक्षसों का शोर! कलियुग का गमन मंद पड़ गया! धर्म-देवता का श्रम अधिक-सा हो गया।

उन कलियुग के दानवों को यमपुरि पहुँचाने का ब्रह्मादि देवताओं ने श्री महाविष्णु से प्रार्थना की, तो श्रीस्वामी ने अपना सुदर्शन चक्र भेजा, जिसने भूगोल की छान-बीन कर, जल एवं थल दुर्गों में छिपे बसे समस्त राक्षसों का वध कर दिया। इस महत्तर कार्य पर संतुष्ट होकर सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मदेव ने महेंद्रादि देव-गण समेत जाकर महाविष्णुजी की स्तुति की और इस संस्तूय-मान् कार्य की सराहना में एक विजयोत्सव मनाने की अनुमति माँगी, तो विष्णु भगवान ने उत्सव मनाने की अनुमति देदी। आनंदनिलय के सामने सभी देवी-देवता लोग इकट्ठा होकर बड़े संरंभ के साथ धमाकेदार उत्सव मनाया! आगमी दिनों में ये ही उत्सव ''ब्रह्मोत्सव'' नाम से मनाये जाने लगे!! तिरुमलेश के ब्रह्मोत्सव समस्त विश्वभर में प्रसिद्ध हैं।

तिरुमल तथा तिरुपति वैकुंठधाम की भाँति अलंकृत होकर जगमगा जाते हैं। भूगोल के कोने से प्रभु बालाजी के भक्त यहाँ पधारे, श्रीस्वामी के उत्सवों को अपने नेत्रोत्सव बना लेते हैं!!

भगवान बालाजी के ये ब्रह्मोत्सव दस दिन चलते हैं। दसवें दिन, इन महोत्सवों के कारण-भूत श्री सुदर्शन स्वामी के ''चक्रस्नान'' से ब्रह्मोत्सवों की परिसमाप्ति हो चलती है!! अभी इस वर्ष कोरोना वायरस के वजह से सभी वाहन सेवाएँ एकांत के तौर पर संपन्न होते हैं।

वेंकटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन।
वेंकटेश-समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

कलियुग वैकुण्ठ में ब्रह्मोत्सव वैभव

आचार्य यद्दनपूडि वेंकटरमण राव
मोबाइल - ९४४१४५८१९१

पृथ्वी पर विलसित कलियुग के अधिनायक श्री वेंकटेश्वर भगवान हैं। उनका पवित्र धाम तिरुमल गिरि है। प्रभु की अनवरत अनेक सेवाएँ संपन्न होती हैं। ये सब उत्सव ही हैं। इन में नित्योत्सव, वारोत्सव, पक्षोत्सव, मासोत्सव आदि अनेक हैं। सब में विशिष्ट महोत्सव 'ब्रह्मोत्सव' हैं। गरिमा, महत्ता, विशेषता, वैभव आदि में ब्रह्मोत्सवों का विशिष्ट स्थान हैं। ये वार्षिक उत्सव हैं। सृष्टिकर्ता ब्रह्म की इच्छा से उनके द्वारा निर्देशित और नियोजित उत्सव होने के कारण ही उन्हीं के नाम पर ये 'ब्रह्मोत्सव' नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। श्री बालाजी के ब्रह्मोत्सवों का वैभव प्रत्यक्ष अनुभव से ही प्राप्त होते हैं। उनके मिलनेवाली अनुभूति शब्द वर्णन से परे है। क्योंकि यह भक्ति, अनुभूति एवं आनंद के योग से संप्राप्त होनेवाली है।

''उत्सूते हर्षं भगवतः इति उत्सवः''

पद्मसंहिता में उत्सव शब्द का प्रथमतः उल्लेख मिलता है - ''सवः सांसारिकं दुःखम्।'' इस पृथ्वी पर जन्म लेनेवाला सांसारिक जीव अनेक दुःखों से गुजरता है। इस दुःख को ''भव सागर दुःख'' भी कहा गया है। भव सागर दुःख से मुक्त कर ''आनंद सागर'' तक ले जानेवाला ही

उत्सव है। भगवान को संतोष देनेवाला और उनको प्रसन्न करनेवाला ही उत्सव कहा गया है। इस संदर्भ में ''सवः'' शब्द का अर्थ आनंद ही है। ''सवः'' शब्द का अर्थ मरीचि संहिता में 'यज्ञ' भी है। यह यज्ञ मंगलदायक है -

''उत्कृष्ट यज्ञत्वात् उत्सवः परिकीर्त्यते।''

श्री वेंकटेश्वर भगवान के वार्षिक उत्सवों को 'ब्रह्मोत्सव' नाम पडने के पीछे प्रमुखतः चार कारण बताये जाते हैं -

१. विष्णु भगवान के नाभि कमल से जन्में ब्रह्म ने सब से पहले महर्षियों और देवताओं सहित इस उत्सव का आरंभ किया है। ब्रह्म के नेतृत्व में संपन्न होने के कारण यह ब्रह्मोत्सव है।

२. इस का दूसरा कारण हैं कि तिरुमल पहाड पर आकर विलसित भगवान विष्णु अवतार नहीं है। स्वयं वैकुण्ठ से पधारे परब्रह्म महाविष्णु हैं। उनका उत्सव होने के कारण भी यह ब्रह्मोत्सव है। महान उत्सव है। महोत्सव है।

३. तिरुमल गिरि पर श्री वेंकटेश्वर भगवान के अनेक उत्सव संपन्न होते हैं। उन सब में अत्यंत वैभव के साथ संपन्न किया जानेवाला महान उत्सव होने के कारण भी यह ब्रह्मोत्सव है।

४. एक और मुख्य चतुर्थ कारण हैं कि यह उत्सव नव ब्रह्माओं द्वारा नौ दिन पर्यन्त मनाया जानेवाला उत्सव है, इसलिए भी यह ब्रह्मोत्सव है।

विष्णु भगवान का तिरुमलवासी होना

श्री महाविष्णु वैकुण्ठ को त्यागकर वेंकटाचल क्षेत्र में आ विलसे हैं। इस अवतरण के पीछे एक गाथा है। महाभारत युद्ध के उपरान्त श्रीकृष्णावतार की परिसमाप्ति भी हो जाती है। द्वापर युगांत इसी से जुडा है। फिर कलियुग का आरंभ भी हो जाता है। कलियुगारंभ से लोक में अधर्म और अशांति फैलने लगे। निवारणार्थ ऋषियों ने एक महायज्ञ किया। यज्ञोपरान्त यज्ञ फल दान केलिए एक परीक्षा ली गयी ब्रह्म, विष्णु और महेश्वर की। इस परीक्षा को भृगु महर्षि ने लिया। त्रिमूर्तियों की परीक्षाओं के बाद विष्णुमूर्ति को श्रेष्ट देवता घोषित किया गया। लोक कल्याणार्थ यज्ञ फल श्री विष्णु को अर्पित किया गया। परीक्षा के समय वैकुण्ठ में घटी घटना के परिणाम स्वरूप

लक्ष्मीदेवी कोल्हापुर आ गयी और विष्णु भगवान शेषाचल आ ठहरे। (इस गाथा का सविस्तार 'श्री वेंकटेश्वर भगवान का अवतार' पुस्तक में पा सकते है। यह पुस्तक तिरुमल तिरुपति देवस्थान से प्रकाशित है।)

तिरुमल क्षेत्र वराह क्षेत्र भी कहा जाता है। वराह स्वामी ने श्रीनिवास को कुछ स्थल वास के लिए दिया। वहीं लोक कल्याणार्थ श्री वेंकटेश्वर विलसे हैं। पुत्र ब्रह्मदेव ने पिता की अनुमति से उत्सवों की भी योजना बनायी। ब्रह्म के निर्देशन में और नियोजन में चलनेवाले उत्सव होने के कारण इन उत्सवों को ब्रह्मोत्सव नाम ख्यात हुआ।

ब्रह्मोत्सव : एक झलक इतिहास की

ऐतिहासिक आधारों से प्रमाणित हैं कि सन् ६१४ में पहली बार पल्लव राणी सामवायी (पेरिंदेवी) ने 'मनवाळ पेरुमाल' की सोने की उत्सव मूर्ति बनवाकर मंदिर को दी थी। इस मूर्ति को कन्यामास में संपन्न होनेवाले ब्रह्मोत्सवों में पहले पुरवीथियों की शोभायात्रा में शामिल किया गया। एक प्रकार से ब्रह्मोत्सवों की परंपरा का ऐतिहासिक आधार वहीं से प्राप्त होता है।

इसी क्रम में सन् १२५४ के चैत्र मास में तेलुगु पल्लव राजा विजयखण्ड गोपाल देव ने; सन् १३२८ के आषाढ़ मास में त्रिभुवन चक्रवर्ति तिरुवेंकट यादव राय ने; सन् १४२९ के आश्वीज मास में वीरप्रताप देव रायलु ने; सन् १४४६ में हरिहररायलु ने और सन् १५३० में अच्युत रायलु ने ब्रह्मोत्सवों की परंपरा को समुन्नत करके आगे बढाया है। यह परंपरा सन् १५८३ तक चलती रही।

राजा तथा उनके राज्यों के कालगर्भ में विलीन होने के साथ-साथ उनके द्वारा चलायी गयी परंपरा तो रुकी, लेकिन सृष्टिकर्ता ब्रह्म द्वारा आरंभ किये गये ब्रह्मोत्सव तो चलते रहे। सप्तगिरि राय का श्रृंग वैभव आज भी चतुर्दिक व्यापी ही है।

समय और विधान

श्रीनिवास भगवान का वेंकटाद्रि पर आविर्भाव कन्यामास (आश्वीज मास / अगहन का महीना) में श्रवणा नक्षत्र में आनंदनिलय में हुआ है। ब्रह्मदेव ने वार्षिक ब्रह्मोत्सवों का समय निर्देश भी उसी समय के आधार पर किया है। उसके अनुसार कन्यामास के श्रवणा नक्षत्र दिवस तक ये ब्रह्मोत्सव

संपन्न होते हैं। श्रवणा नक्षत्र से पहले के नौ दिन पर्यन्त महावैभव के साथ उत्सव मनाये जाते हैं।

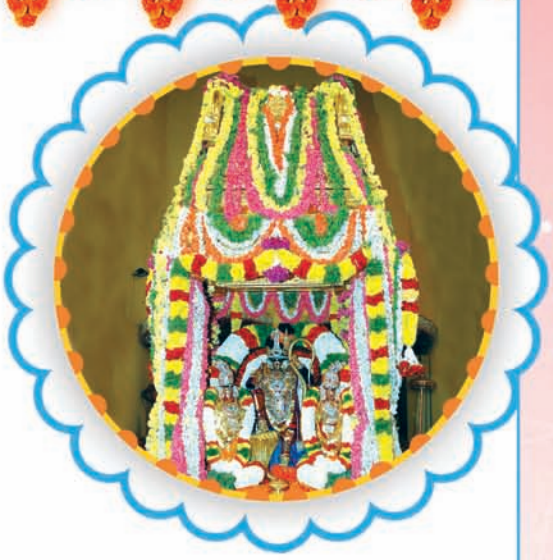

भारतीय पंचांग के अनुसार चांद्रमान की गणना पर महीनों की व्यवस्था है। सूर्यमान के साथ गणना बिठाना भी इस व्यवस्था के समानांतर में है। इस क्रम में तिथि, वार, नक्षत्र आदि के भी व्यवस्थीकरण की सुविधा भी है। इसके परिणाम स्वरूप हर तीसरे वर्ष में एक अधिक मास की व्यवस्था बनी है। ऐसी व्यवस्था में कन्यामास में एक ब्रह्मोत्सव और दशहरा नवरात्रि के दिनों में एक और ब्रह्मोत्सव का निर्वाह भी होता है। ऐसे दो ब्रह्मोत्सव जब धरित होते हैं तब भाद्रपद मास में 'वार्षिक ब्रह्मोत्सव' (सालकट्ल ब्रह्मोत्सव) और दूसरा ब्रह्मोत्सव 'दशहरा ब्रह्मोत्सव' या 'नवरात्रि ब्रह्मोत्सव' के रूप में व्यवहृत हैं।

ब्रह्मोत्सव योजना

आजकल ब्रह्मोत्सव की योजना बहुत ही निर्दिष्ट और सुनियोजित है। इस की जानकारी से पहले भक्त-प्रवर अन्नमाचार्य जी ने एक गीत में अपने समय के ब्रह्मोत्सव का परिचय दिया है। आपका समय सन् १४२४-१५०३ है। आज की व्यवस्था और उस समय की व्यवस्था में कुछ अंतर है। उस संकीर्तन (गीत) का हिन्दी रूपांतरण इस प्रकार है देखिए –

तिरुवीथियों में चमके देव देव
अतुलित अमित सिंगारों में।।
प्रथम दिवस चले तिरु दंडियों पर,
श्रीयुत विलसे शेष पर द्वितीय दिवस
शोभित हुए दिवस तृतीय मोती वितान में
चतुर्थ दिवस को पुष्प पालकी में।।
पंचम दिवस चुने गरुड को
षष्ठ दिवस रहा गजराज का
सप्तम दिवस लसे सूर्यप्रभा संग
अष्टम् दिवस रथ अरु तुरंग।।
सुवर्ण पालकी चढे नवम् दिवस पर
दशम् दिवस् पर मनाये मंगल
माता अल्मेलमंगा संग विमल
विलसे श्री वेंकटेश बहु वाहनों पर।।

अतुलित सिंगारों से युक्त शोभायात्राओं में आजकल किसी प्रकार की कमी दिखाई नहीं देती है। उनमें उन्नति और वैभवपूर्ण परिणति स्पष्ट झलकती है।

ब्रह्मोत्सवों का प्रथम चरण 'कोयिल आल्वार तिरुमंजन' (मंदिर शुद्धि) है। तत्पश्चात् ब्रह्मोत्सव अंकुरार्पण और ध्वजारोहण सेवा से आरंभ होता है और ध्वजावरोहण पर्यन्त चलता है। नौ दिन पर्यन्त प्रतिदिन सुबह और शाम की शोभायात्राएँ भक्ति मंदाकिनियाँ ही हैं। इन में भक्त कलाकार अपने विविध कला रूपों का प्रदर्शन करते हैं। देश के विभिन्न प्रांतों के भक्त अपनी-अपनी भक्ति युक्त एवं मर्यादापूर्ण प्रदर्शनों से भगवान की शोभायात्राओं को समुन्नत बनाते हैं। इतना ही नहीं भक्तों के भजन वृन्द भक्ति स्फोरक भजनों से; वेद पंडित वेद मंत्रों से दर्शक भक्तों को शांति और तोष प्रदान करते हैं। तिरुमल

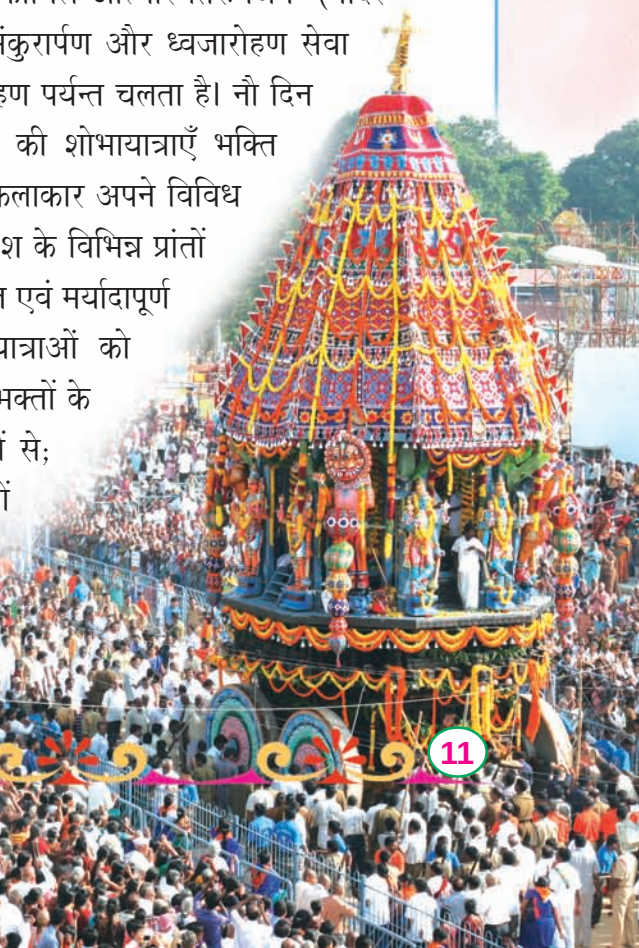

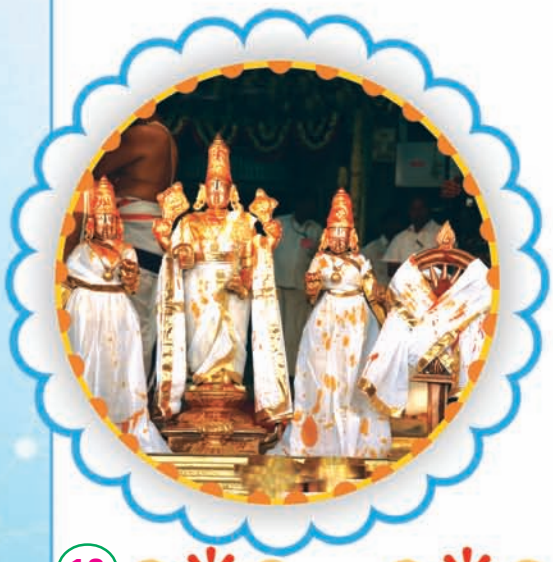

तिरुपति देवस्थान के भक्ति छानल द्वारा इन उत्सवों का प्रत्यक्ष प्रसारण व विशेष व्याख्यानों द्वारा संपन्न होते हैं। इससे दूर-दूर के भक्त उत्सवों की विशेष अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

अंतिम और प्रथम गण्य एक और विशेषता है। प्रतिदिन सुबह शाम शोभायात्रा में ''ब्रह्म का रथ'' आगे होना। इस में निर्गुण निराकार ब्रह्म विलसते है। उनकी कोई मूर्ति नहीं रहती। यह रथ शून्य रथ भी कहलाता है। ज्ञान का प्रतीक है। आजकल ब्रह्मोत्सव के दिनों में वाहन सेवाओं का क्रम इस प्रकार है -

प्रथम दिवस - सुवर्ण तिरुच्चि उत्सव (सायं)
ध्वजारोहण (सायं) - महाशेषवाहन (रात)

द्वितीय दिवस - लघुशेषवाहन (सुबह) - हंसवाहन (रात)

तृतीय दिवस - सिंहवाहन (सुबह) - मोतीवितानवाहन (रात)

चतुर्थ दिवस - कल्पवृक्षवाहन (सुबह) - सर्वभूपालवाहन (रात)

पंचम दिवस - पालकी में मोहिनी अवतार (सुबह)
गरुड़ वाहन (रात)

षष्ट दिवस - हनुमन्तवाहन (सुबह) - गजवाहन (रात)

सप्तम् दिवस - सूर्यप्रभावाहन (सुबह) - चन्द्रप्रभावाहन (रात)

अष्टम् दिवस - रथोत्सव (सुबह) - अश्ववाहन (रात)

नवम् दिवस - पालकी उत्सव (सुबह)
चक्रस्नानम् (सुबह) - ध्वजावरोहण।

उत्सवों के आरंभ के पूर्व दिन श्री सेनापति उत्सव चलता है। भगवान विष्णु के सेनापति विष्वक्सेन हैं। बीच में सुवर्ण रथ पर अधिरोहित हो भगवान एक दिन दोपहर के बाद शोभायात्रा में भक्तों को आनंद प्रदान करते हैं। इतना ही नहीं वसंतोत्सव भी इन उत्सवों में एक प्रधान अंग हैं।

श्री बालाजी भगवान का विभव अनन्य और असामान्य है। भक्त भाग लेकर ही आनंद पाता है।

सर्वावयव सौंदर्य संपदा सर्वचेतसाम्।
सदा सम्मोहनायास्तु वेंकटेशाय मंगलम्।।

श्री वेंकटेश सुप्रभात

स्तोत्र रचना - श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामीजी

व्याख्या - श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी

मोबाइल - ९३६४३२४८४४

श्री आदिशेष के अवतार यतिराज रामानुजाचार्य के पुनरवतारभूत विशदवाक्शिखामणि श्री वरवरमुनीन्द्रजी के स्थापित अष्ठदिग्गजाचार्य नाम से प्रसिद्ध आठ शिष्यों में से एक श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा जब उन आचार्य के साथ तिरुमल गये थे वे अपने आचार्य की आज्ञा से श्री वेंकटेश सुप्रभात, स्तोत्र, प्रपत्ति, मंगलाशासन इन चार स्तुति ग्रन्थों को, श्री वेंकटेश जी के सामने, प्रातःकाल में विज्ञापन किये। प्राचीन समय से अनुसंधान में रहे, 'कौसल्या' इस इतिहास श्रेष्ठ श्री रामायण श्लोक और 'उत्तिष्ठ' इस किसी पुराण श्लोक को भी मिलाकर इन चार स्तोत्रों को रचे। उस समय से लेकर आज तक सुप्रभात के समय में इनका पाठ बराबर चल रहा है।

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।

उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्॥१॥

पदार्थ -

कौसल्यासुप्रजः - हे कौसल्याजी के सुपुत्र,

नरशार्दूल - मनुष्यों में श्रेष्ठ (मर्यादा पुरुषोत्तम),

राम - हे राम, पूर्वा संध्या - प्रातःकाल (का समय),

प्रवर्तते - प्रारम्भ होता है,

दैवं आह्निकम् - देवताओं को उद्धेश कर कर्तव्य दिन का अनुष्ठान,

कर्तव्यं - करना है,

उत्तिष्ठ - (जाग) उठो।

भावार्थ - कौसल्याजी के सत्पुत्र पुरुषोत्तम हे राम भोर हो गया है। प्रातःकाल कर्तव्य विहित कर्मों को करना है जाग उठो। विश्वामित्र महर्षि इस श्लोक को पढकर श्रीरामजी को जगाते हैं, ऐसा श्री रामायण में प्रसंग है।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु॥२॥

पदार्थ -

गोविन्द - गायों को चराने वाले हे कृष्ण,

उत्तिष्ठ - झट से (अविलम्ब से) (जाग) उठो,

गरुडध्वज - गरुडजी को झण्डे में रखनेवाले,

उत्तिष्ठ - उठो,

कमलाकान्त - श्री जी के प्रियतम,

उत्तिष्ठ - उठो,

त्रैलोक्यं - तीनों लोकों को,

मंगलं कुरु - मंगलवान करो।

भावार्थ - महालक्ष्मी के पति गरुडध्वज (को रखने वाले) हे कृष्ण! तीनों लोकों को अपने कटाक्ष से पावन करने के लिए जल्दी से उठो।

कौसल्या सुप्रजा राम इस (पद) को कौसल्या-सुप्रजः राम ऐसा दो विभाग करें तो कौसल्याजी के सत्पुत्र ऐसा, कौसल्या - सुप्रजा - राम ऐसा तीन विभाग करें तो सुप्रजाः। यह कौसल्या का विशेषण होकर हे राम तुम्हारी माता कौसल्या सत्पुत्रवती ऐसा अर्थ निकलेगा। इन दोनों प्रकारों (प्रतिपादनों) से हे राम ऐसे सुन्दर तुम्हारे जैसे पुत्र (तया) को जन्म दिये कौसल्याजी कितनी भाग्यवती है, ऐसी प्रशंसा फलित है। विश्वामित्र महर्षि श्रीरामजी और श्रीलक्ष्मणजी दोनों को जगाकर उनके हाथ से सम्पादनीय अपने यज्ञ (रक्षण) कार्य को भूलकर रामजी की माता की प्रशंसा करने लग गये। भोजन करने प्रवृत्त जैसा अपने मुख को भूल जाता है (भूल जाकर - खाना छोडकर जैसा चीज की यह कैसा सुन्दर बनाया है, ऐसी प्रशंसा में प्रवृत्त हो जाता है- ''भोजनकाले विस्मृतमुखो मुनिरासीत्'' यह व्याख्याता गोविन्दाचार्य का वचन है।)

वैसा इस सत्पुत्र को जन्म देने वाली भाग्यवती है, ऐसा कौसल्या की प्रशंसा में प्रवृत्त हो गये हैं।

'राम' पद का-अपने देह सौन्दर्य, उदारता, अन्यान्य सद्गुण, लीला आदि से सब को आह्लादित

करने वाला यह अर्थ होता है। यह एक ही दिव्यनाम सहस्रनाम के बराबर वैभव युक्त है। ''श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे! सहस्रनाम तत्तुल्यं राम-नाम वरानने।।'' मेरी प्यारी स्त्री (मैं) श्रीराम राम राम ऐसा कहते संतोष पाता हूँ क्योंकि वह सहस्रनाम के बराबर है। ऐसा पार्वतीजी से शिवजी की इस उक्ति से इस नाम के प्रभाव को जान सकते हैं। यह नाम, दशरथ नंदन राघव मात्र को नहीं बल्कि वह जिसका अवतार है, उस परब्रह्म का भी है। ऐसा ''रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि। इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते'' इस अगस्त्य संहिता के वचन को उद्धृत कर श्री रामायण के व्याख्याता श्री गोविन्दाचार्य बताते हैं।

कोलुवु

श्री वेंकटेश्वर स्वामी को प्रतिदिन तोमालसेवा के बाद प्रातःकाल में स्वर्ण देहली (बंगारु वाकिली) के पास संपन्न होने वाला पंचांग श्रवण ही कोलुवु है।

अष्टांगसिद्धयोगि लोग, सब देश में, सब काल में, सब वस्तु के रूप में रहने से असीम, एक ही स्वरूप, आनंद स्वरूप, ज्ञान स्वरूप परमात्मा में रमते हैं- मन लगाकर आनंदित होते हैं। इस कारण से यह परमात्मा परब्रह्म 'राम' शब्द से कहा जाता है (यही उपरोक्त वचन का अर्थ है।) अतः परब्रह्मवाचक 'राम' नाम उसके अवतार दाशरथि को भी बताता है।

पूर्व संध्या - प्रातःकाल होता है। इससे उत्तर संध्या सायंकाल है, मध्य संध्या मध्यान्ह (दोपहर) है, यह सूचित होता है।

उत्तिष्ठ नरशार्दूल - उत्तम पुरुष लोगों को, जगकर श्रद्धा से कर्तव्य कार्य रहते, निद्रा के परवश होना उचित नहीं इस अर्थ को बताता है एवं अब तक (रामजी का) निद्राकालीन सौन्दर्य का अनुभव किया हूँ तथा अब जग उठने के सौन्दर्य का अनुभव करना है, अतः उठो यह भी अर्थ कहेंगे।

दैवं आह्निकं कर्तव्यं - जग उठने पर जो प्रयोजन होता है वह इससे कहा जाता है। देव-परमात्मा से वेदादि शास्त्रों में विहित नित्यकर्म का अनुष्ठान (तुमको) करना है; देव तुझसे उस शास्त्रों में विहित नित्यकर्मों को, मुझे करना है उसे स्वीकार करने के लिए जाग उठो ये दो अभिप्राय (मतलब) कहेंगे (इन शब्दों से ऐसा दो अर्थ निकलता हैं)।

तिरुप्पावडसेवा

तिरुप्पावडसेवा प्रति गुरुवार सुबह ६.०० बजे को स्वर्ण देहली (बंगारु वाकिली) के सामने श्री वेंकटेश्वर की मूलमूर्ति को प्रस्तुत 'पुलिहोरा राशि' का निवेदन।

२ - उत्तिष्ठ यह द्विरुक्ति त्वरा को दिखाता है। 'गोविन्दो वासुदेवस्स्याद्गवाध्यक्षे' इस निघण्टु की उक्ति से 'गोविन्द' शब्द वासुदेव तथा गोपाल दोनों को सूचित करता है। 'वासुदेव' शब्द 'वासुश्चासौ देवश्च वासुदेवः', 'वसुदेवस्य पुत्रः वासुदेवः', इन दोनों व्युत्पत्तियों से निष्पन्न होता है। पहली व्युत्पत्ति से समस्त लोक जिसमें रहे, समस्त लोक में जो रहे ऐसा भगवान, उनके दोषों से अस्पृष्ट 'नारायण' का, दूसरी व्युत्पत्ति से 'कृष्ण' का अवबोध होता है। अतः 'गोविंद' शब्द प्रथम 'नारायण' को, मध्य में वसुदेव पुत्र को, अन्त में गोकुल में आकर गोपाल हुए भगवान को बताता है, ऐसा समझ सकते हैं।

'गो' शब्द का भूमि, वाक्, सूर्य ऐसे कई अर्थ हैं। उसके अनुसार वराहावतार लेकर भूमि को प्राप्त करने वाले, वामन होकर उदकधारा पूर्वक भूमि को प्राप्त करने वाले, हंस होकर शब्द राशि (वेद) को विभक्त करने वाले, हयग्रीव होकर उस वेद को प्रकाशित करने वाले, सूर्य मण्डल को प्राप्त करने वाले (सूर्यमण्डल में रहने वाले) ऐसा 'गोविन्द' शब्द का अर्थ बताते हैं। पहले श्लोक में (कौसल्या) श्रीरामजी को जगाये हैं। इस श्लोक (उत्तिष्ठ) में उनके बाद के कृष्णजी को जगाये हैं, ऐसा मान सकते हैं।

आल्वार (दिव्यसूरि) लोग श्री वेंकटेश भगवान को कई जगह कृष्णजी के रूप में वर्णन किये हैं। श्रीरामजी के रूप में तो कुछ ही स्थल

में वर्णन किये हैं। अवतार क्रम को ध्यान में रखते हुए, आचार्यों को, आल्वारों का अनुसरण करना बहुत उचित समझकर, गोविन्द को प्रथम जगाकर उसके बाद रामजी को जगाना ही क्रम प्राप्त है, ऐसा विचार हो सकता है। लेकिन किसी पुराण का होगा ऐसा माने जाने वाला (किस पुराण का है ऐसा आकर निश्चित रूप से न मालूम होने से) 'उत्तिष्ठ' श्लोक की अपेक्षा इतिहास श्रेष्ठ श्री रामायण का है, ऐसा प्रसिद्ध 'कौसल्या' श्लोक श्रेष्ठ है। ऐसा 'श्लोक गौरव' को ही मन में विचार कर उत्कृष्ट श्लोक को कह कर श्रीरामजी को जगाये हैं ऐसा मान सकते हैं।

पुनः वराहपुराण के प्रथम भाग के उन पचासवें अध्याय में इन्द्रादि देवता, चतुर्मुख ब्रह्म को पुरस्कार कर, (आगे कर) जब स्तोत्र किये तब श्रीनिवास भगवान (वेंकटेश जी) ऐसा कहते हैं कि ''आप लोग निश्चिंत रहें। कुछ ही समय में रावण का भाई-बन्धू सहित मैं वध कर डालूंगा, यह सत्य है।'' इस उक्ति के रहने से श्री वेंकटेश जी व श्रीरामजी दोनों एक है (अभिन्न हैं) ऐसा स्पष्ट मालूम होता है। इस उक्ति को ध्यान में रखते हुए यदि देखें, तो वाल्मीकि महर्षि अपने रचित श्री रामायण में (बालकाण्ड-२-१५) व्याध को शाप दिया और श्रीरामजी को मङ्गलाशासन किया ऐसा दो आशय (अभिप्राय) को बताने वाले 'मा निषाद' श्लोक में, मानिषाद - मा निषीदति अस्मिन् इस व्युत्पत्ति से श्रीरामजी को, श्रीनिवास-कमल निवासिनी के नित्य सन्निधि करने योग्य वक्षःस्थल वाले ऐसा संबोधन कर मंदोदरी-रावण नाम वाले राक्षस युगल में कामपरवश रावण नाम के पुरुष का वध कर इस जगत की रक्षा करने से तुम अनंतकाल तक स्थिर जीवित रहो। ऐसा आशीर्वाद करते समय ऐसा आशय अभिव्यक्त होने से श्रीरामजी और श्री वेंकटेश जी दोनों अभिन्न हैं। ऐसा आशय वाल्मीकि महर्षि का हो सकता है। ऐसा विचार कर (समझकर) ऐसे महर्षि के 'कौसल्या' श्लोक को गौरव देते हुये श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा 'उत्तिष्ठ' श्लोक के पहले 'कौसल्या' श्लोक को निबद्ध किये हैं। ऐसा मानना भी उचित ही प्रतीत होता है।

उत्तिष्ठ गरुडध्वज - 'ध्वजः चिन्हे पताकायां' इस हैमनिघण्टु के अनुसार 'गरुडजी को अपना चिह्न रखने वाले, गरुडजी को अपनी ध्वजा में रखने वाले।' ये दो अर्थ होते हैं। गरुद्भिः डयते-पंखों के सहारे आकाश में उड़ने वाला, सर्पान् गिरति-सर्पों को निगलने वाला। ऐसा दो अर्थों को बताते हुए पक्षियों के राजा का नाम बना है।

कमलाकान्त - कान्त शब्द 'कमु-कान्तौ' 'कन दीप्तौ' इन धातुओं से उत्पन्न होकर क्रमशः प्रेम व प्रकाश (तेज) ऐसा दो अर्थवाला होता है। अतः 'कमलायाः कान्तः' इस व्युत्पत्ति से भगवती लक्ष्मी में प्रेम रखने वाला इस अर्थ को, 'कमलया कान्तः' इस व्युत्पत्ति से लक्ष्मीजी के कारण देदीप्यमान (प्रकाशयुक्त) हैं, इस अर्थ को भी बताता है।

नेत्र दर्शन

श्री वेंकटेश्वर स्वामी का बिना किसी आभूषणालंकार के, केवल माथे पर अलंकृत पुण्ड्र (नामम्) सहित दर्शन का सौभाग्य ही स्वामी का नेत्र दर्शन है।

प्रथम अर्थ से पत्नी में प्रेम रहित पति नहीं, प्रेमयुक्त पति है, यह द्योतित होता है (श्री शठकोपसूरि की उक्ति इस विवरण का मूल है।)

द्वितीय अर्थ से, कान्ति, शरीरकान्ति, आत्मकान्ति ऐसा दो प्रकार का होकर, तत्र प्रथम में अपने शरीर की नीलज्योति के लक्ष्मीजी की हिरण्यज्योति के मिश्रण से हुए एक अपूर्वज्योती से युक्त (मोर के कण्ठ के रंग जैसा) (श्री परकाल सूरि की उक्ति इस विवरण का मूल है।) इस तात्पर्य को बताता है। आत्मज्योति शब्द 'तेज' शब्द वाच्य 'पराभिभवन सामर्थ्य' को बताता है। भगवान को यह सामर्थ्य लक्ष्मीजी के संबंध से होता है। 'अप्रेमयं हि तत्तेजः यस्य सा जनकात्मजा' (रा.आ. ३८-१८) (अपने पुरुषकार के वैभव से) प्रसिद्ध जानकी जिनके हैं उस रामजी का वह 'तेज' असीम है। ऐसा देवी के संयोग से भगवान पराभिभवन सामर्थ्यवान होता है, ऐसा श्री रामायण का वचन बताता है।

त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु - 'त्रयो लोका एव त्र्यैलोक्यं'- स्वार्थेष्यञ् प्रत्ययान्त शब्द है। लोक शब्द जगत को और जनता को बताता है। 'लोकस्तु भुवने जने' यह अमरकोश है। एवं तुम जागकर तीनों लोकों को मंगलयुक्त करो; ऐश्वर्य, कैवल्य व परमपद इन पुरुषार्थों को चाहनेवाली जनता, अपने अपेक्षित पुरुषार्थ को प्राप्त कर सके ऐसा (अनुग्रह) करो ऐसा दो अर्थ (अभिप्राय) निकलता है।

जाग उठना, कटाक्षपात का उपलक्षण है, उत्तिष्ठ, कुरु ये लोट् प्रत्यय प्रार्थना में (प्रार्थनार्थ में) होकर जाग उठें पूर्ण कटाक्ष से देखें। देखकर हमें मंगल प्रदान करे ऐसा भी अर्थ कह सकते हैं। अथच लोक्यते = अनुभूयते इति लोकः इस व्युत्पत्ति से 'लोक' पद, अनुभूयमान फल के वाचक होकर, तत्तदधिकारियों को मंगलभूत ऐश्वर्य आदि फलों को प्रदान करें, ऐसा भी अर्थ कह सकते हैं।

क्रमशः

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. के बाग-बगीचे : देवस्थान के दिशा-निर्देश सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिनमें विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के दिशा-निर्देश में धार्मिक कार्यक्रम चलाये जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

अनंत पद्मनाभ व्रत

- डॉ.जी.सुजाता
मोबाइल - ९४९४०६४११२

कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुः वीरोऽनंतो धनंजयः।।

अनंतो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः।।

अनंतरूपोऽनंतश्रीः जितमन्युर्भयापहः।
चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः।।

'अनंत', भगवान श्री महाविष्णुजी के सबसे महत्वपूर्ण और प्रमुख नामों में से एक है। श्रीविष्णु सहस्रनाम स्तोत्र और फलस्तुति में श्री महाविष्णु जी की स्तुति 'अनंत' नाम से की जाती है। 'अनंत' का अर्थ है, जो सर्व व्याप्त है, जो शाश्वत है, जो सभी सीमावों से परे है, जिनके लिए समय, स्थान की कोई सीमा नही है, जिनके अनंत रूप है, जो पूरे ब्रह्मांड में बसता है।

हमारे हिन्दूधर्म में भगवान श्री महाविष्णु जी के नाम पर कई प्रकार के व्रतचर्या निर्धारित किये गये हैं, 'अनंत पद्मनाभ व्रत' उनमें से एक विशिष्ट व्रत है जो भगवान विष्णु को समर्पित है। पूरे भारत में, हर साल यह व्रत भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष में चतुर्दशी के दिन (जो चौदहवाँ दिन होता है) मनाया जाता है। चूँकि यह व्रत चतुर्दशी के दिन मनाया जाता है, इसलिए यह व्रत 'अनंत चतुर्दशी' नाम से भी प्रसिद्ध है। चतुर्दशी का दिन, पूर्णिमा तिथि के साथ जुडने के कारण, यह अत्यन्त शुभ और पवित्र दिन माना जाता है। इस दिन शेष शयन मुद्रा में अनंत पद्मनाभ रूप में विराजित भगवान श्री महाविष्णु जी की पूजा की जाती है, 'अनंत' शब्द ही अर्थ देता है, जो अशेष, असीम व जिसका न आदि हो और न ही अंत। सदियों से ऐसी मान्यता रही हैं कि 'अनंत पद्मनाभ' के रूप में भगवान विष्णुजी की पूजा करने से, असीम आनंद प्राप्त होती है, भक्तों की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है और उनके सारे दुःखों का हरण हो जाता है। विष्णुजी की उपासना के बाद 'अनंत सूत्र' हाथ में बाँधा जाता है। भगवान विष्णु का रूप माने जाने वाले यह 'अनंत सूत्र' को 'अनंत धागा' या 'रक्षा सूत्र' भी कहा जाता है। रेशम या सूत से बना हुआ इस सूत्र में १४ गांठे लगाई जाती है। भगवान की पूजा भी १४ प्रकार के फूल, फल और १४ पकवानों से की जाती है। पुराणों के अनुसार 'अनंत व्रत' लगातार १४ साल किया जाता है, चौदहवें साल विधिवत् उद्यापन करके व्रत पूरी की जाती है।

अनंत व्रत में १४ संख्या का अधिक महत्व है। ऐसी मान्यता हैं कि भगवान ने १४ लोक बनाये जिनमें सत्य, तप, जन, मह, स्वर्ग, भुवः, भू, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल

चार प्रधान पैदल मार्ग

देश के चारों कोनों से आते हुए यात्रियों के वास्ते चार प्रधान पथ होते थे। वे प्रमुखतया - तिरुपति से तिरुमल जानेवालों के लिए **''अलिपिरि से आनंदनिलय का रास्ता''**, दूसरा - श्रीनिवासमंगापुरम् से आगे बढ़ने वाला **''श्रीवारिमेट्टु या श्रीपतिजी का मेट्टु-मार्ग''**, तीसरा उधर कर्णाटक से आने वालों के लिए **''भाक्रापेटा-देवरकोंडा अरण्य-पथ''** और चौथा - कड़पा की तरफ से जानेवालों के लिए मामंडूरु से शुरू होने वाला **''स्वामी के पादों का रास्ता।''**

शामिल हैं। कहा जाता हैं कि श्री विष्णु ने इन सभी लोकों की रक्षा करने के लिए १४ अलग-अलग अवतार लिए।

यह माना जाता हैं कि जो भी व्यक्ति अपनी पूरी श्रद्धा, भक्ति से और ईमानदारी के साथ इस व्रत का पालन करता है, वह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे गुण प्राप्त करता है। गाय को दान के रूप में देना अत्यन्त पवित्र और पुण्य कार्य माना जाता है।

अनंत व्रत की पूजा विधि

इस दिन व्रत रखकर भगवान विष्णु के अनंत रूप में पूजा की जाती है। व्रत की पूजा दिन के समय होती है। भगवान विष्णु के साथ यमुना नदी और शेष नाग की भी पूजा की जाती है।

- सुबह सबसे पहले स्नान करके, साफ सुथरे वस्त्र धारण करके, व्रत का संकल्प करें। और पूजा मंदिर में कलश की स्थापना करें।
- कलश के ऊपर अष्ट दलों वाला कमल रखकर, कुश से बने अनंत की स्थापना करें। चाहें तो विष्णु की प्रतिमा की भी पूजा कर सकते है।
- इस व्रत का महत्वपूर्ण अनुष्ठान 'अनंत सूत्र' की पूजा है। एक धागे में कुमकुम, केसर और हल्दी आदि से रंगकर अनंत सूत्र बनाई जाती है, जिसमें १४ गांठे लगाना है। यह सूत्र भगवान विष्णु को अर्पित करते हैं।
- अब विष्णुजी और सूत्र की षोडशोपचार विधि से पूजा करते हैं। पूजा संपन्न होने के पश्चात सूत्र को इस मंत्र का जप करते हुए, पुरुष दाएँ हाथ में और स्त्रियाँ बाएँ हाथ में बाँधते हैं।

अनंत संसार महा समुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव।
अनंत रुपे विनियोजयस्व ह्यानंत सूत्राय नमो नमस्ते।।

मोकालिमेट्टु (घुटन-भर सीढ़ी)

अक्कगार्ल मंदिर से आगे चलकर दाईं तरफ मुड़ने से ज़रा-सी दूर में मोकालिमेट्टु (घुटन-भर सीढ़ी), सुंदर गोपुर। गोपुर द्वार से निकलने वाली सीढ़ियाँ ऐसे ही ऊपर जाकर त्रोवभाष्यकार्लु (रास्ते के भाष्यकार) की सन्निधि में पहुँचाती हैं। वहाँ से तिरुमल ज्यादा दूर न होगा। मोकालिमेट्टु पुराना मंडप, सारे पेट्टेलु, देशांतरि-मंडपों को पार कर तिरुमल पहाड़ पहुँच जाते हैं। इस संदर्भ में घुटन-भर सीढ़ियों को पार करते समय, सोपान-मार्ग के दोनों ओर वैष्णव भक्त शिखामणि आल्वारों के विग्रह हममें भक्तिभाव का प्रादुर्भाव करते हैं।

- अंत में यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराके पूरे परिवार के साथ प्रसाद ग्रहण करें।

अनंत पूजा की व्रत कथा

प्राचीन काल में सुमंत नामक ऋषि, अपनी पत्नी दीक्षा के साथ वन में निवास करते थे। ऋषि को एक पुत्री हुई जिसका नाम सुशीला रखा गया था। सुशीला के जन्म के कुछ समय बाद उसकी माता दीक्षा का देहांत हो गया। पत्नी के मरने के बाद सुमंत ने कर्कशा नामक स्त्री से दूसरा विवाह कर लिया, वह महिला क्रूर स्वभाव की थी। जब सुशीला बडी हुई तो, सुमंत ने उसका विवाह कौण्डिन्य नामक ऋषि के साथ कर दिया। सुमंत दामाद को विदाई में कोई उपहार देना चाहते थे, पर पत्नी कर्कशा दामाद के प्रति अशिष्ट व्यवहार करती है। सुमंत केवल शादी में बची हुई गेहूँ का आटा देता है। कौण्डिन्य अपनी पत्नी सुशीला को लेकर अपने आश्रम जाते हुए, रास्ते में संध्यावंदन के लिए नदी के तट पर रुकते हैं। वहाँ पर सुशीला ने देखा कि कई स्त्रीयाँ लाल साडी पहन कर, पूजा कर रही थी और एक दूसरे को रक्षासूत्र बाँध रही थी।

यह देखकर सुशीला ने व्रत का महत्व और पूजन के बारे में पूछा। उन्होंने विधि पूर्वक अनंत व्रत की महत्ता बताई। इस व्रत के प्रभाव से सभी कष्ट दूर होते हैं और मनोकामनाएँ पूर्ण होती है। सुशीला ने वही उस व्रत का अनुष्ठान किया और चौदह गांठों वाला सूत्र हाथ में बांध कर ऋषि कौण्डिन्य के पास आ गई।

समय के साथ कौण्डिन्य ऋषि का जीवन सुधरने लगा, व्रत के प्रभाव से उनके जीवन में धन-धान्य की वृद्धि होने लगी। अगले साल फिर सुशीला ने अनंत व्रत किया और अनंत सूत्र धारण किया। जब ऋषि कौण्डिन्य ने सूत्र के बारे में पूछा, तो सुशीला ने अनंत व्रत की महिमा बताई, साथ ही कहा कि उनके जीवन में धन-

धान्य की वृद्धि इस व्रत के कारण हुआ है। यह सुनकर कौण्डिन्य क्रोधित हो गये, ऋषि को लगा कि पत्नी उनकी मेहनत का श्रेय भगवान को दे रही है और गुस्से में आकर उन्होंने अनंत सूत्र तोडकर अग्नि में डाल दिया। इससे भगवान अनंतजी का अपमान हुआ। भगवान अनंत ने धीरे-धीरे ऋषि कौण्डिन्य से उनकी सारी संपत्ती वापस ले लिया। अपनी दरिद्रता का कारण अनंत सूत्र जलाने के कारण होने की बात पत्नी से जानकर, पश्चाताप करते हुए ऋषि कौण्डिन्य ने पत्नी के साथ मिलकर पूरे विधि-विधान से अनंत पद्मनाभ का व्रत किया। लगातार चौदह सालों तक इस व्रत का पालन करने से भगवान अनंत जी प्रसन्न होकर ऋषि कौण्डिन्य को दर्शन दिए और उनके जीवन में फिर से खुशियाँ आयी। उन्हें सारे क्लेशों से मुक्ति मिल गई।

मान्यता हैं कि भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों को अनंत पद्मनाभ की कथा सुनाई थी; श्रीकृष्ण की आज्ञा से पांडवों ने भी अपने वनवास में हर साल अनंत व्रत का पालन किया। जिस के प्रभाव से पांडव महाभारत के युद्ध में विजयी हुए। कहा जाता हैं कि सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को भी इस व्रत के प्रभाव से राज-पाट वापस मिल गया था।

भगवान अनंत पद्मनाभ के मंदिर

हमारे पास, विशेष रूप से दक्षिण भारत में कई मंदिर है जो भगवान श्री अनंत पद्मनाभ का समर्पित हैं। उनमें से प्रमुख केरल में तिरुवनंतपुरम (त्रिवेंद्रम) का मंदिर है।

एक और प्राचीन मंदिर भी है जो मंगलूर के पास कुडुपु में स्थित है। यह मंदिर नागदोष के लिए की जानेवाली 'अश्लेष बलिपूजा' के लिए काफी लोकप्रिय है।

हैदराबाद शहर से लगभग ७५ किलोमीटर दूर अनंतगिरि में भगवान अनंत को समर्पित एक और बहुत प्राचीन मंदिर है। कहा जाता हैं कि भगवान एक सलग्राम शिला के रूप में प्रकट हुए है जो, अनंत, नरसिंह और श्रीनिवास के त्रिमूर्ति स्वरूप में प्रकट हुई हैं। कहा जाता हैं कि ऋषि मार्कंडेय ने यहाँ पर तपस्या की थी।

श्रीरंगम (त्रिची) श्रीरंगपटना (मैसूर के पास) और शिवन समुद्र (मैसूर के रास्ते में बेंगलूरु से लगभग १०० कि.मी.) ये तीनों क्षेत्र पवित्र नदी कावेरी के तट पर स्थित हैं। इन क्षेत्रों में भी शेष शयन मुद्रा में लेटे हुए भगवान श्री महाविष्णु के मंदिर उपस्थित है।

अनंत चतुर्दशी के दिन इन सभी मंदिरों में विशेष उत्सव मनाये जाते हैं। अनंत चतुर्दशी भक्ति, एकता और सौहार्द्र का प्रतीक है, जो पूरे भारत में धूम-धाम से मनाया जाता है। इस दिन, श्रीविष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्र का पठन करना अत्यधिक पुण्यदायी माना जाता है।

नमोऽस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये
सहस्रपादाक्षिसिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटियुगधारिणे नमः।।

जो सहस्र रूपों में प्रकट हुआ हों, जिसके सहस्र भुजाएँ, शीर्ष, पाँव, नेत्र हों, जिसके असंख्य नामधेय हों, जो अविनाशी हों और जो हजारों, करोडों युग को धारण करता हों, उस अनंत मूर्ति को प्रणाम।

जय श्रीमन्नारायण!!

श्री वेंकटेश्वर का अवतार रहस्य

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया
मोबाइल - ९६६४६१३०१३

भारतीय अवतारवाद में श्रीहरि का अभयवचन है, ''जब-जब पृथ्वी पर कोई आपत्ति आएगी तब अधर्म का नाश करने के लिए और धर्म की स्थापना हेतु मैं पृथ्वी पर अवतार धारण करूँगा।'' आइए हम इस विषय में विज्ञान में दृष्टिपात करें। डार्विन ने जब शोध की उसके २००० साल पहले भारतीय पुराण में श्रीहरि के १० अवतार की बात मिलती है। पुराण में अवतार का जिस क्रम दिखाया है वही क्रम डार्विन के उत्क्रांति बाद में भी बताया है। वह क्रम इस तरह है सबसे पहले जलचर (मत्स्य अवतार) उभयचर (कच्छप अवतार) पशु अवतार (वराह भगवान) मानव पशु (नरसिंह) आदि मानव (वामन) वन मानव (परशुराम) संस्कृत मानव (राम) विकसित मानव (कृष्ण) सर्वोच्च मानव (बुद्ध) और प्रलय मानव (कल्कि) अवतार का इस क्रम विज्ञान में डार्विन के उत्क्रांति वाद और पुराण में एक ही क्रम से है।

आइए हम थोड़ा पौराणिक कथा में नजर करें...

कृष्णावतार कि यह बात हैं कि किरात शिकारी के बाण से भगवान श्रीकृष्ण घायल हुए थे। तब सभी द्वारका वासी, माँ यशोदा और मित्र अर्जुन सभी लोग यहाँ आये। भगवान परंधाम की ओर जा रहे थे सब लोग विलाप करने लगे यशोदा ने श्रीकृष्ण से कहा कि 'हर जन्म में मैं तेरी सेवा करना चाहता हूँ। किसी जन्म में मुझे अलग मत करना मैं आपकी सेवा की प्यासी हूँ।' माता यशोदा के उत्तर में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा 'हे माँ आप यह देह त्यागने के बाद शेषाचल पर जन्म लेंगे वहाँ आपका नाम वकुलमालिका होंगे, वहाँ आप आदिवराह भगवान की नित्य सेवा करते रहना मैं वहीं पर आपको मिलने आऊँगा।' सब गोपी और अर्जुन को सांत्वना दी। बाद में भगवान श्रीकृष्ण वैकुंठ धाम पधारे इस तरफ गोपियों ने ऋषि रूप धारण किया और शेषाचल की ओर चले वहाँ भगवान को मिलने के लिए तप करने लगे।

वैकुंठ में श्रीहरि का सोचना...

परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण हर समय वैकुंठ में विराजमान रहते हैं। सुरिजनों के साथ विहार करते हैं और हम पामर जीवों के बारे में सोचते रहते हैं। जब-जब धरातल पर विपत्ति आती है तब-तब प्रभु किसी भी अवतार लेकर पृथ्वी पर आते हैं और मानव का कल्याण करते हैं। हम सब जानते हैं कि त्रेतायुग में भगवान श्रीराम और द्वापरयुग में भगवान श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया था इसी तरह कलियुगी जीवों का उद्धार और कल्याण करने हेतु भगवान श्रीहरि ने दक्षिण भारत में तिरुमल पवित्र नगरी में शेषाचल पर्वत ऊपर श्री वेंकटेश जी के नाम से अवतार लिया है। भगवान का यह अवतार ''स्वयं व्यक्त'' है। भगवान अपनी इच्छा से यहाँ स्थिर हुई है इसीलिए अवतार ''स्वयं व्यक्त'' कहलाते हैं। वराह पुराण, पद्म पुराण, भविष्य पुराण सभी में श्री वेंकटेश जी की अवतार की कथा मिलती है।

नारद जी की पिता ब्रह्म से मुलाकात...

एक समय की बात है नारद मुनि अपने पिता ब्रह्मा जी को मिलने गया। नारद जी ने भवन में प्रवेश किया माता-पिता को प्रणाम किया तब ब्रह्मा जी ने पुत्र नारद से कहा की ''पुत्र नारद तुझे लोक कल्याण का कार्य करना चाहिए। कलियुग में भगवान नारायण ने अवतार ग्रहण नहीं किया

है कलियुग में सभी मानव भक्ति और श्रद्धा से दूर होकर मूर्खता के कारण अनेक पापाचार करते हुए सभी लोग नरक की ओर जा रहे हैं। इसीलिए तुम कोई ऐसा उपाय करो कि कलियुग में भगवान पृथ्वी पर अवतार धारण करके सभी मानव को भक्ति युक्त बनाकर मोक्ष के अधिकारी बना सके।''

''नारद जी ने यह बात का स्विकार किया। नारद जी यहाँ से पृथ्वी लोक की ओर चले।''

नारद जी का भूलोकगमन...

नारद जी भूलोक में गंगा नदी के तट पर आये। गंगा तट पर यह सब ऋषि मुनि गण एक बड़ा यज्ञ कर रहे थें। सभी ऋषि गण ने नारद जी का स्वागत सम्मान किया यज्ञ के बारे में नारद जी ने एक संदेह ऋषि गण के दिमाग में छोड़ दिया, नारद जी ने बोला कि आप लोग यह यज्ञ किस देवता की प्रसन्नता हेतु कर रहे हैं? इसका फल किस देवता को अर्पण करेंगे? ऋषि गण सोचने लगे उसको कोई हल नहीं मिला तब नारद जी से हल पूछा। तब नारद जी ने श्रेष्ठ देवता कौन यह तय करने को बोला नारद जी ने कहा कि त्रिमूर्ति में से कौन सत्व गुण संपन्न है? और कौन मोक्ष रूपी फल

दाता है? तभी आपका यज्ञ सफल होगा नारद जी को मालूम था कि त्रिदेव में श्रीहरि श्रीमन्नारायण की ही जीत होगी इसके लिए सभी ऋषि भृगुऋषी के पास गये। भृगु ने ऋषि गण की इच्छा से त्रिदेव की परीक्षा की, इसमें भगवान श्रीमन्नारायण की जीत हुई। यह कथा से हम सब लोग परिचित है। और निश्चित हुआ कि भगवान श्रीमन्नारायण श्रेष्ठ देवता है, वही सब मानव को मोक्ष प्रदान करने वाला है।

श्रीहरि का शेषाद्री गमन...

परीक्षा करने से एक घटना ऐसी घटी के भगवान श्रीमन्नारायण की छाती में भृगु ने लात मारी थी नारायण की छाती में श्री लक्ष्मी जी का निवास है तब श्री लक्ष्मी ने अपना अपमान माना। श्रीहरि और लक्ष्मी जी के बीच बहुत बड़ा झगड़ा हुआ। तब श्री लक्ष्मी जी भूलोक पर कोल्हापुर में आ गए। यहाँ भगवान को पाने के लिए तप करने लगे। इस तरफ वैकुंठ कि दशा 'श्री' हीन बन गई, तेज हीन हो गया वैकुंठ। इस घटना से श्रीहरि को लगा कि लक्ष्मी जी भूलोक पर चल गई वहाँ के मानव लक्ष्मी जी से भरपूर बनेंगे और भक्ति से दूर होकर मोक्ष

से भी दूर होंगे। तब उसने सोचा कि मैं लक्ष्मी को भूलोक से लेकर या वहीं वैकुंठ में ले आउ तब यहाँ की शोभा ठीक बनेगी। इसीलिए श्रीहरि भी पृथ्वी लोक के कल्याण हेतु भूलोक में आ गये। लक्ष्मी जी की शोध करने लगा अनेक जगह पर घूमते फिरते शेषाचल की ओर आये। आदिशेष ने 'शेषाचल' नामक पहाड के रूप में धरती पर अवतार धारण कर, उसका शिरो भाग वेंकटाद्रि और मध्यभाग भाग नृसिंहाद्रि और पुच्छ भाग श्रीशैलम् के नाम से प्रचलित है। भगवान को यह रमणीय सौंदर्य से भरपूर स्थान बहुत सुंदर लगा। वह यहाँ तप करके लक्ष्मी जी को प्रसन्न करना चाहता था।

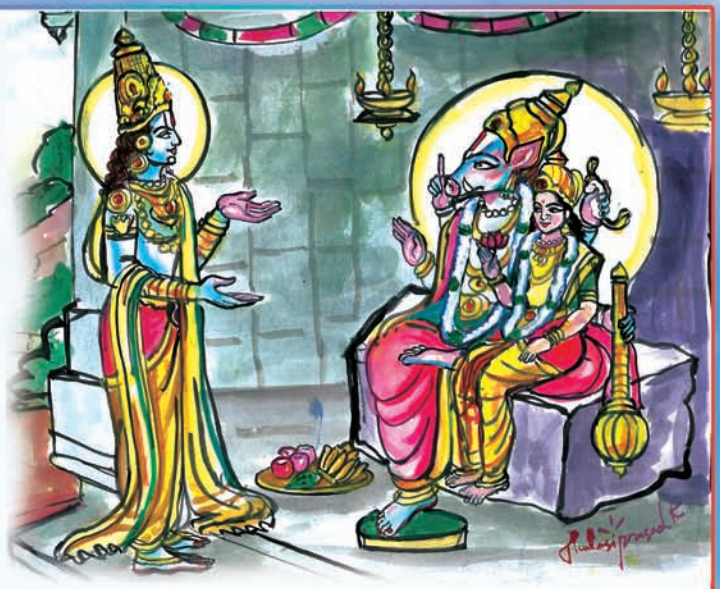

श्री शेषाचल पर निवास

श्री वराह भगवान ने हिरण्याक्ष का वध किया, भूदेवी का उद्धार किया उसके बाद भूलोक में विहार करने के लिए वराह भगवान की आज्ञा से गरुड़ जी ने क्रिडाद्री पर्वत यहाँ(भूलोक) ले आया। ये क्रिडाद्री पर्वत ही शेषाचल पर्वत के नाम से बाद में प्रचलित हुआ। इस जगह का अधिपति आदिवराह भगवान है। श्रीहरि विष्णु भगवान वराह भगवान के पास आइए और इस पर्वत पर निवास करने की अनुमति मांगी तब आदिवराह भगवान ने श्रीहरि का परिचय लिया उसके बाद ही शेषाचल में रहने की अनुमति दी। भगवान ने कहा कि आज से आप पर्वत के कोई भी हिस्से में रह सकते हो। आप और मैं मूल रूप से एक ही तो है। श्रीहरि बहुत खुश हुआ। श्रीहरि ने वराह भगवान को कहा कि जब लक्ष्मी आएगी तब तक मैं यहाँ तप करूँगा इसके बाद मेरा नाम श्रीनिवास रहेगा बाद में मूर्ति स्वरूप में मैं यहाँ रहूँगा। मैं यहाँ रहकर सब भक्त जनों का दुःख दूर कर के सब का कल्याण करुँगा। आप इस क्षेत्र का अधिपति हो इसीलिए जो भी भक्त यहाँ दर्शन हेतु आएंगे वह सबसे पहले आपका दर्शन करेंगे बाद में मेरा दर्शन करेंगे, नैवेद्य भी पहले आपको समर्पण करने के बाद ही मुझ को समर्पित करते हैं। तब उसकी मनोकामना पूर्ण होगी। श्रीहरि ने वराह भगवान को अपने बड़े भैया की पदवी प्रदान की। आदिवराह भगवान भी प्रसन्न हुआ और श्रीहरि को बोला कि आप यहाँ वेंकटेश्वर नाम से प्रसिद्ध होंगे और यह पर्वत वेंकटाद्रि-वेंकटाचल नाम से ख्याति होंगे। तब से श्री वेंकटेश जी और वराह भगवान दोनों वेंकटाद्रि पर्वत पर निवास करने लगे और भक्तों की मनोकामना पूर्ण करके सुख संपत्ति प्रदान करने लगा धन्य हो श्री वेंकटेश्वर को।

नमः श्री वेंकटेशा वेंकटगिरी वासी ने,
दर्शनार्थीषु लोकेषु सदानुग्रह वर्षिणे। (१)
श्री वेंकटेश चरणों मनसा स्मरामि,
श्री वेंकटेश चरणों वचसा गृणामि।
श्री वेंकटेश चरणों शिरसा नमामि,
श्री वेंकटेश चरणों शरणं प्रपध्ये।। (२)

जय श्रीमन्नारायण!!

नाम स्मरण का महत्व

- श्री के.रामनाथन
मोबाइल - ९४४३३२२२०२

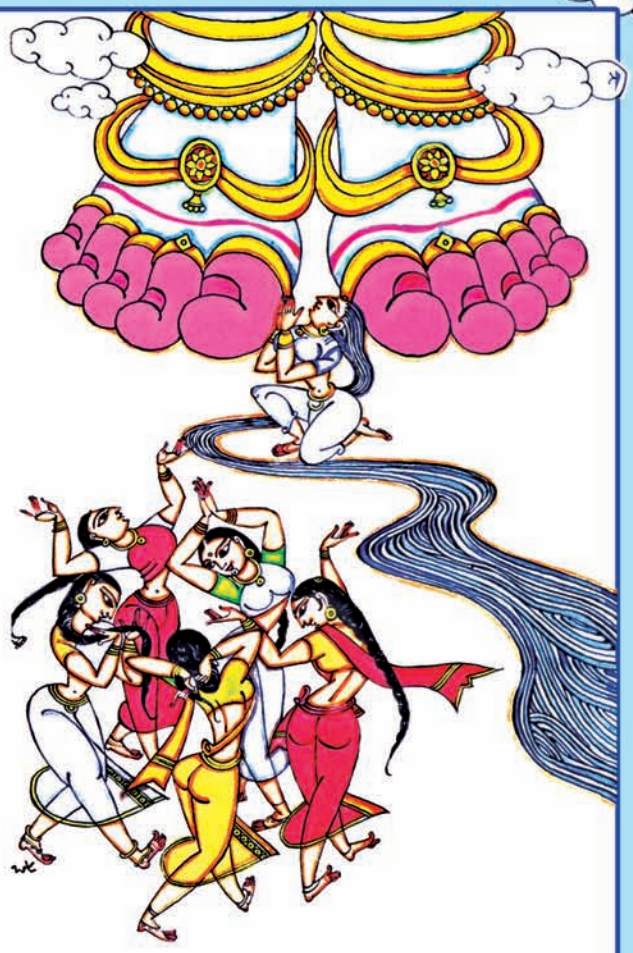

यह तो सत्य हैं कि भक्ति रसामृत सिंधु है। भक्ति शब्द के लिए विभिन्न विद्वान विभिन्न प्रकार की परिभाषायें देते हैं। उल्लेखनीय बात यह हैं कि ईश्वर के प्रति होनेवाले प्रगाढ एवं आंतरिक प्रेम को ही भक्ति माना जा सकता है। भजनम् भक्ति माना जाता है। इसका मतलब यह हैं कि आराध्य का भजन ही भक्ति है। इसमें आराध्य के नाम, गुण, लीला आदि का गान होता है। शांडिल्य सूत्र में ईश्वर के प्रति अपूर्व तथा आन्तरिक अनुराग को ही भक्ति के रूप में उल्लेख किया गया है। जैसे,

सा (भक्ति) परानुरक्तिः ईश्वरे।

ईश्वर के प्रति रखने वाली भक्ति तो नौ प्रकार की होती है। जैसे,

श्रवणं कीर्तनं विष्णो स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वन्दनं साख्यमात्मिवेदनम्।

इनमें उत्तम भक्ति तो भगवान के नाम स्मरण कहा जाता है। इस पर संत तुलसीदास का कथन हैं कि

कलियुग केवल नाम आधारा।
सुमिर - सुमिर नर उरहिं पारा।।

यह तो सर्व मान्य सत्य हैं कि इस कलियुग में मानव जीवन का बेडा पार कराने की शक्ति केवल भगवान के नाम स्मरण में ही है। हम तो जानते हैं कि बडा पापी अजामिल भी भगवान के नाम स्मरण के कारण मृत्युपाश से छुटकारा पाया था। इतना ही नहीं वाल्मीकि के बारे में भी यह प्रसिद्ध हैं कि-

तलयेरुगुंडु

वाग्गेयकार ताल्लपाका अन्नमय्या ने भी इस तलयेरुगुंडु को छूकर परवश हुआ था। इसी को तलताकिडिगुंडु कहते हैं। यह एक स्वस्थता-शिला है। स्वस्थता का चिह्न। पहाड़ की सीढ़ियाँ चढ़कर उतरने वाले यात्री अपने पाँव, सिर की बाधाओं के निवारणहेतु, उन-उन अंगों को इस शिला के उन-उन प्रदेशों में रगड़ने से, बाधाओं का निवारण हो जाने में भक्तों का विश्वास है।

उल्टा नाम जपा जग जाना।
वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।।

महाभारत में हम जानते हैं कि जब भरी सभा में साडी अपहरण कर द्रौपदी का अपमान किया जाता है, तब वह तुरन्त श्रीकृष्ण का नाम स्मरण कर अपने मान को बचा लेती है। वैसे ही मगर से पीडित हाथी जब भगवान विष्णु का नाम लेता है, तुरंत उसे दुःख से छुटकारा मिल जाती है। ये सब भगवान के नाम स्मरण की महिमा है।

श्री शुकदेव महाराज परीक्षित् को श्रीकृष्ण के नाम स्मरण के महत्व को समझाते हुए कहते हैं, ''राजन! यों तो कलियुग में दोषों का खजाना है। इस युग में केवल भगवान श्रीकृष्ण का संकीर्तन करने मात्र से सारी आसक्तियाँ छूट जाती हैं और परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है।'' श्रीमद् भागवतम् भी श्री केशव के नाम स्मरण के महत्व को बल देते हुए उल्लेख करती है कि-

यतफलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना।
ततफलं लभते सम्यवक्कलौ केशव कीर्तनम्।

संत तुलसीदास भगवान के नाम स्मरण के महत्व पर अधिक विश्वास रखते हैं। इसलिए अपने काव्य में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करते हैं। जैसे,

कलियुग सम जुग अननहिं जो नर कर विश्वासा।
गाई राम गुन गन विमल भवतर बिहिं प्रयासा।

\- - -

भाव कुभाव अनख आस, गुं नाम जपत मंगल दिसि दशहूँ।

इस कलियुग में भगवान की प्राप्ति का मार्ग श्रीमद् भागवतम् में साफ-साफ कहा गया है,

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखेः।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरि कीर्तनात्।।

इसका मतलब यह हैं कि सत्ययुग में भगवान विष्णु के ध्यान से, त्रेतायुग में यज्ञ से और द्वापरयुग में भगवान की पूजा से फल मिलता था। वह सब कलियुग में भगवान के नाम-कीर्तन मात्र से प्राप्त हो जाता है।

इसलिए भूलोक वैकुंठ के नाम से प्रसिद्ध तिरुमल में चारों ओर भक्त जन भक्ति भाव में पूर्ण रूप से निमग्न होकर एक ही कंठ में भगवान का नाम लेते हुए कहते हैं, श्रीनिवासा... वेंकट रमणा... गोविंदा गोविंदा!! उनका पूर्ण विश्वास हैं कि भगवान के नाम स्मरण से जीवन की रिक्तता, अभाव, दरिद्रता, दैन्यता, विषाद सब समाप्त हो जाएँगे। जीवन समृद्धिशाली एवं ऐश्वर्यपूर्ण हो जाएँगे।

इसलिए हम भी एक स्वर में कहेंगे कि भज ले हरि का नाम। राम नाम सुखदायी भजन कर भाई।

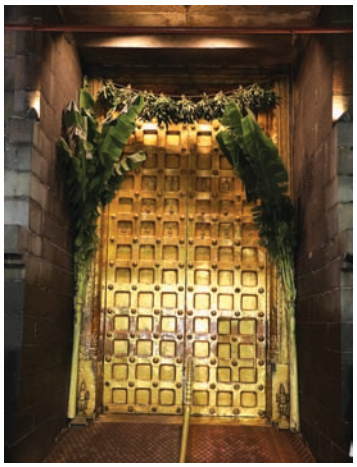

पहला दर्शन

हर रोज श्री वेंकटेश्वर जी के सुप्रभात समय में पहला दर्शन करने का सौभाग्य सन्निधि गोल्ल(ग्वाला) को ही प्राप्त है। क्योंकि जिस बिल में भगवान विष्णु छिपे रहे, उस बिल में पहले दूध डालकर, गाय ने स्वामी की देखभाल की थी। वे ही वंशज सन्निधि गोल्ल(ग्वाला) बनते हैं। यह सन्निधि गोल्ल हर रोज स्वर्ण दरवाजे को खोल कर पहले मंदिर में प्रवेश करते हैं। बाद में अर्चक स्वामी प्रवेश करते हैं और सुप्रभात पूजा-पाठ शुरू होते हैं। रात को एकांतसेवा के बाद अंत में स्वर्ण दरवाजों को बंद करने वाला भी वही सन्निधि ग्वाला होता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२० सितंबर
१९ से २७ तक

२०-०९-२०२० रविवार
रात - हंसवाहन

२१-०९-२०२० सोमवार
दिन - सिंहवाहन

२१-०९-२०२० सोमवार
रात - मोतीविलानवाहन

२२-०९-२०२० मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२० सितंबर
१९ से २७ तक

तिरुमल तिरुपति देवस्थानं

२२-०९-२०२० मंगलवार
रात - सर्वभूपालवाहन

२३-०९-२०२० बुधवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव

designpsivaprasad

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२० सितंबर
१९ से २७ तक

२४-०९-२०२० गुरुवार
दिन - हनुमन्तवाहन

२४-०९-२०२० गुरुवार
रात - गजवाहन

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२० सितंबर
१९ से २७ तक

२५-०९-२०२० शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन

२५-०९-२०२० शुक्रवार
रात - चंद्रप्रभावाहन

designpsivaprasad

कलियुग का कल्पवृक्ष श्री वेंकटेश्वर

- डॉ.के.सुधाकर राव, मोबाइल - ८३२८२२०३६५

कलियुग में तिरुमल में विराजमान श्री वेंकटेश्वर कल्पतरु तुल्य हैं। कल्याणकारी हैं। समृद्धिप्रदायक हैं। हर दिन बड़ी संख्या में भक्त गण भगवान जी के दर्शन के लिए आते हैं। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने चार प्रकार के भक्तों के बारे में बताया है।

चतुर्विधाः भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासु रर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।।

भगवान कहते हैं- चार प्रकार के भक्त मेरी उपासना करते हैं। पहला भक्त 'आर्त' है। यानी किसी समस्या से या बाधा से या कमी से ग्रस्त व्यक्ति। दूसरा

है 'जिज्ञासु'। जिज्ञासा का मतलब है जानने की इच्छा रखना। 'ज्ञान पिपासु' कह सकते हैं। तीसरा 'अर्थार्थी' यानी धन की इच्छा रखने वाला। चौथा 'ज्ञानी'। ज्ञानी के मन में कोई आकांक्षा नहीं रहती। बस, भगवान के दर्शन मात्र से संतुष्ट हो जाता है।

जिज्ञासु, ज्ञानी-लोग बहुत कम होते हैं। लेकिन कलियुग में आर्त एवं अर्थार्थी ही भारी मात्रा में उपस्थित होते हैं। भगवान वेंकटेश्वर के लिए उपर्युक्त चार प्रकार के भक्त अत्यन्त प्रिय हैं। उनके परिप्रेक्ष्य में सभी समान हैं। अब हम आम भक्तों के बारे में चर्चा करेंगे।

तिरुमल नगर एक ऐसा पवित्र तीर्थस्थान है, जहाँ पर भक्त हर रोज दर्शन के लिए बडी संख्या में आते रहते हैं। इनमें से सभी लोग मनौतियाँ माँगते हैं। कुछ लोग लुढ़कते हुए प्रदक्षिण करते हैं। इसको तेलुगु में 'पोर्लुदण्डालु' कहते हैं। कुछ लोग शिरोमुण्डन करवाते हैं। कुछ लोग हर शनिवार को उपवास रखते हैं। कुछ लोग अष्टाक्षरी या द्वादशाक्षरी मंत्र का लेखन (लिखित जप) करते हैं। बहुत सारे भक्त विभिन्न सेवाओं (श्रीवारि सेवा) में भाग लेते हैं। श्रवणा नक्षत्र के दिन कुछ लोग पूजा-पाठ करते हैं। कुछ लोग माला से मंत्र जाप करते हैं। अखिलांड के पास नारियल फोडते हैं। दीप प्रज्वलन करते हैं। घुटने में सीढ़ियाँ चढते हैं। कुछ भक्त हर एक सीढ़ी को कुंकुम-हल्दी का समर्पण करते हैं और कुछ भक्तगण हरेक सीढ़ी को कर्पूर आरती देते हैं। कुछ लोग तुलाभार में चावल, पैसा आदि रूपों में मनौतियाँ समर्पण करते हैं।

बहुत सारे भक्त सालभर कुछ पैसा एकत्रित (इकट्ठा) करते हैं। तिरुमल यात्रा के दौरान उस धन का उपयोग करते हैं। मनौतियाँ माँगना, संकल्प करना किसी कामना की आपूर्ति के लिए ही होता है। निष्काम भावना से वेंकटेश जी की पूजा करना सिर्फ योगियों के लिए या वीतरागियों के लिए संभव है।

चाहे भक्तों की कामना किसी भी प्रकार की क्यों न हो, प्रभु वेंकटेश्वर उस मनोरथ को सफल बनाते हैं। इसमें दो राय नहीं। कुछ भक्त ब्रह्मोत्सव में भाग लेते

अलिपिरि

खूबसूरत पहाड़ी शिखरों में अपने मंदिर-मीनारों से, शिल्पों से शोभित मंडपों से विराजमान् दिव्यधाम ही अलिपिरि है। तिरुमल पाद-पीठ तिरुमल पहाड़ पर जाते, उतरे घाट-रोड़ों, पगडंडी का केन्द्र-स्थान है।

अलिपिरि को तमिल में 'अड़िवुलि', 'अड़िपड़ि' कहके कुछ लोग पुकारते। 'अडि' कहने से पहला, 'पडि' कहने से सीढ़ी मतलब है। अडिपडि का मतलब पहली सीढ़ी है। अलिपिरि का अर्थ अल्पशरीरि भी अर्थ बताते हैं। श्री वेंकटेश्वरस्वामी यहाँ सूक्ष्म शरीर से भक्तों का अनुग्रहण करते रहते हैं।

हैं। विविध वाहनों पर विराजमान श्री मलयप्पस्वामी का दर्शन करने के माध्यम से धन्यता को प्राप्त करते हैं। सामूहिक भजन में भाग लेते हैं। नृत्य में, गायन में भाग लेते हैं। रोगनिवारण, किसी का विवाह, ऋणबाधा से मुक्ति, विद्याभ्यास में प्रगति, व्यापार में बढ़ोत्तरी, न्यायालयीन विवादों में विजय की प्राप्ति... इस प्रकार भक्तों के मनोरथ विभिन्न प्रकार के होते हैं। आज तक इस कलियुग में कोई भी भक्त ऐसा नहीं जो तिरुमल के दर्शन करके खाली हाथ लौटा हो। स्तोत्र में भगवान के इसी मंगलमय रूप का वर्णन किया गया है -

कल्याणाद्भुतगात्राय कामितार्थप्रदायिने।
श्रीमद्वेंकटनाथाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

अर्थात् वेंकटेश्वर कल्याणकारी, विस्मयकारी दिव्यशरीर से विराजमान हैं। भक्तों के मनोरथों को सफल बनाने में सक्षम हैं। इस प्रकार के वेंकटेश्वर का अस्तित्व मंगलमय हो। इससे पहले हम ने चार प्रकार के भक्तों के बारे में चर्चा की। भक्तों के लिए प्रभु कल्पतरु के समान है।

श्रियःकान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

अर्थात् प्रभु श्रीनिवास लक्ष्मी के पति हैं। कल्याण कारी तत्वों से निर्भर हैं। और धन चाहने वालों के लिए निधि के समान हैं। इस प्रकार के श्रीनिवास का अस्तित्व मंगलमय हो।

मनौतियाँ माँगना कोई अपराध नहीं। लेकिन त्रिकरणशुद्धि से भगवान की पूजा करें। मनोरथ सफल होने पर आकर तुरंत दर्शन करना चाहिए। शरीर, मन, वचन - तीनों का लक्ष्य एक ही होना चाहिए। इस प्रकार की भक्ति से भगवान संतुष्ट हो जाते हैं। भक्त के मनोरथों को पूर्ण करते ही हैं।

उपासना में शारीरिक एवं मानसिक रूप से शुद्ध होना बहुत आवश्यक हैं। कुल, जाति, प्रान्त, भाषा के भेदों का प्रभु की सन्निधि में कोई महत्व नहीं है। अतः भक्त करुणार्द्र चित्त वेंकटेश्वर का दर्शन करें और अपनी मनोवांछित फल को प्राप्त करें।

पादालमंडप

यहाँ के (पादालमंडप) पादों के मंडप में श्रीस्वामीजी के लोह-पादों को भक्तलोग अपने शिर पर धर कर भक्ति से गर्भालय की प्रदक्षिणा करते हैं।

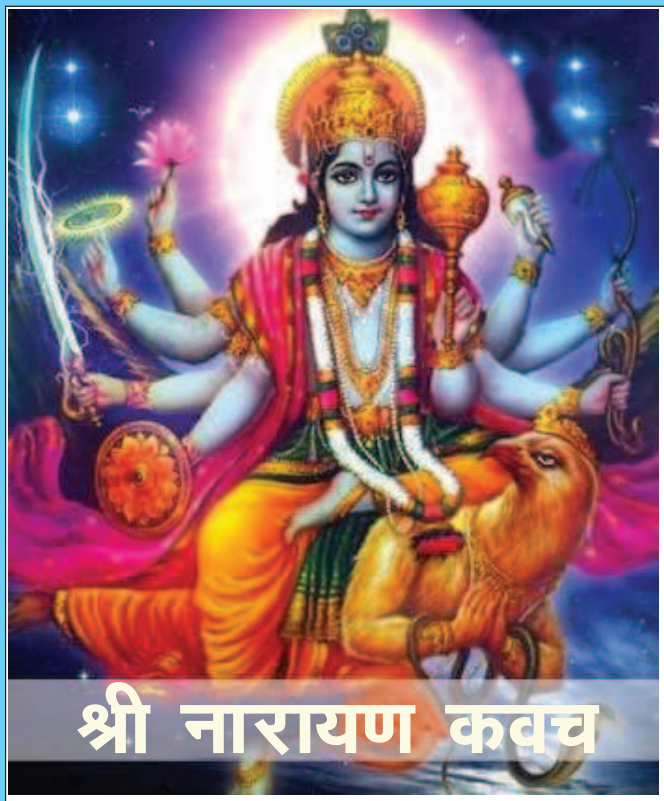

श्री नारायण कवच

- डॉ सी आदिलक्ष्मी
मोबाइल - ९९४९८७२१४९

नारायण कवच को जो पुरुष सुनता है ओ जो आदर पूर्वक इसे धारण करता है उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते हैं और वह सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है। नैमिशारण्य में एक बार राजा परीक्षित् ने शुक से पूछा- ''हे भगवान! देवराज इन्द्र ने जिससे सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरंगिणी सेना को खेल-खेल में अनायास ही जीत कर त्रिलोकी की राजलक्ष्मी का उपभोग किया, आप उस नारायण कवच को मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमि में किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। तब श्री शुकदेव जी ने कहा- 'नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृनु - परीक्षित्! जब देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र के प्रश्न करने पर विश्वरूप ने उन्हें नारायण कवच का उपदेश किया! तुम एकाग्रचित्त से उसका श्रवण करों! विश्वरूप ने कहा- देवराज इन्द्र! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायण कवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिए। उसकी विधि यह हैं कि पहले हाथ-पैर धोकर आचमन करें, फिर हाथ में कुश की पवित्री धारण कर उत्तर को मुँह करके बैठ जाय। इसके बाद कवच धारण पर्यन्त और कुछ न बोलने का निश्चय करके पवित्रता से - 'ॐ नमो नारायणाय' और - 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' - इन मन्त्रों के द्वारा हृदयादि अंगन्यास तथा अंगुष्ठादि करन्यास करें! 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मन्त्र के 'ॐ' आदि आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षःस्थल, मुख और सिर में न्यास करें। अथवा पूर्वोक्त मन्त्र के यकार से लेकर ओम् कार पर्यन्त आठ अक्षरों का सिर से आरम्भ करके उन्ही आठ अंगों में विपरीत क्रम से न्यास करें।

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्तमंगुल्यंगुष्ठपर्वसु।।

तदनन्तर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' - इस द्वादशाक्षर मन्त्र के ॐ आदि बारह अक्षरों का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनी तक दोनों हाथ की आठ अंगुलियों और दोनों अंगूठों की दो-दो गांठों में न्यास करें।

न्यसेद्गृदय ओंकारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखयादिशत्।
वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु।
मकारम त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भयेद् बुधः।
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
'ॐ विष्णवे नम इति।'

फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मन्त्र के पहले अक्षर 'ॐ' का हृदय में 'वि' का ब्रह्मरन्ध्र में 'ष' का भाँहों के बीच में 'ण' का चोटी में 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गाँठों में न्यास करें! तदनन्तर 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कह कर दिग्बन्ध करें। इस प्रकार न्यास करने से इस विधि को जाननेवाला पुरुष मन्त्र स्वरूप हो जाता है। इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान का ध्यान करें और अपने को भी तद्रूप ही चिन्तन करें। तत्पश्चात् विद्या तेज और तपः स्वरूप इस कवच का पाठ करें।

भगवान श्रीहरि गरुड़ जी की पीठ पर अपने चरण कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथों में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए ओं कार स्वरूप प्रभु सब प्रकार से रक्षा करें। मत्स्यमूर्ति भगवान जल के भीतर जल-जन्तुओं से और वरुण के पाश से मेरी रक्षा करें। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करनेवाले वामन भगवान स्थल पर और विश्वरूप श्री त्रिविक्रम भगवान आकाश में मेरी रक्षा करें।

दुर्गेष्वटव्याजि मुखादिषु प्रभुः

पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।

विमुंचत्तो यस्य महाट्टहासम्

दिशो विनेदु र्न्यपतंश्च गर्भाः॥

जिनके घोर अट्टहास करने पर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्य पत्नियों के गर्भ गिर गए थे, वे दैत्य यूथ पतियों के शत्रु भगवान नृसिंह किले, जंगल, रण भूमि आदि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें।

अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा लेने वाले यज्ञमूर्ति वराह भगवान मार्ग में, परशुराम जी पर्वतों के शिखरों पर और लक्ष्मण जी के सहित भरत के बड़े भाई भगवान रामचन्द्र प्रवाह के समय मेरी रक्षा करें।

भगवान नारायण मारण - मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें। ऋषि श्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान दत्तात्रेय योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान कपिल कर्म-बन्धनों से मेरी रक्षा करें।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-

द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।

देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्

कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्।

परमर्षि सनत्कुमार से, हयग्रीव भगवान मार्ग में चलते समय देव-मूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध से

देवर्षि नारद सेवापराधों से और भगवान कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें। भगवान धन्वन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्रिय भगवान ऋषभदेव सुख-दुःख आदि भयानक द्वन्द्वो से यज्ञ भगवान लोकापवाद से बलरामजी मनुष्यकृत कष्टों से और शेषजी के क्रोधवशनामक सर्पों के गण से मेरी रक्षा करें।

द्वैपायनो भगवा नप्रबोधा

द्बुद्धस्तु पाषंडगणात्प्रमादात्।

कल्किः कले कालमला त्रपातु

धर्मावनायोरु कृतावतारः।।

भगवान श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यास जी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें। धर्मरक्षा केलिए महान अवतार धारण करनेवाले भगवान कल्कि पाप बहुल कलिकाल के दोषों से मेरी रक्षा करें। प्रातःकाल भगवान केशव अपनी गदा लेकर कुछ दिन चढ़ जाने पर भगवान गोविंद अपनी बाँसुरी लेकर दोपहर के पहले भगवान नारायण अपनी तीक्षण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें। तीसरे पहर में भगवान मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकाल में ब्रह्म आदि त्रिमूर्तिधारी माधव सूर्यास्त के बाद हृषिकेश, अर्धरात्रि के पूर्व तथा अर्धरात्रि के समय अकेले भगवान पद्मनाभ मेरी रक्षा करें।

रात्रि के पिछले पहर में श्रीवत्सलाञ्छन श्रीहरि उषाकाल में खड्गधारी भगवान जनार्दन, सूर्योदय से पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण सन्ध्याओं में कालमूर्ति भगवान विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि

भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।

दंदग्धि दंदग्ध्यरि सैन्यमाशु

कक्षं यथा वातसखो हुताशः।

सुदर्शन! आपका आकार चक्र (रथ के पहिये) की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलय कालीन अग्नि के समान अत्यन्त तीव्र है। आप भगवान की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास-फूस को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रु सेना को शीघ्र-से शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।

कौमोदकी गदा! आपसे छूटनेवाली चिंगारियों का स्पर्श वज्र के समान है। आप भगवान अजित की प्रिया हैं और मैं उनका सेवक हूँ। इसलिए

आप कूष्माण्ड विनायक यक्ष राक्षस भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिए, तथा मेरे शत्रुओं को चूर-चूर कर दीजिये। शंख श्रेष्ठ! आप भगवान श्रीकृष्ण के फूंकने से भयंकर शब्द करके मरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिए एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियों को यहाँ से झटपट भगा दीजिए। भगवान की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार बहुत तीक्षण है। आप भगवान की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न-छिन्न कर दीजिए। भगवान की प्यारी ढाल! आप में सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आँखे बन्दकर दीजिए और उन्हें सदा केलिए अन्धा बना दीजिए।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योऽहोभ्य एव वा।
सर्वाण्येतानि भगवान्नामरुपास्त्रकीर्तनात्
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः।

सूर्य आदि ग्रह धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य सर्पादि रेंगनेवाले जन्तु दाढ़ोंवाले हिंसक पशु, भूतप्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो-जो भय हो और जो-जो हमारे मङ्गल के विरोधी हों-वे सभी भगवान के नाम रूप तथा आयुधों का कीर्तन करने से तत्काल नष्ट होजाएँ।

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तो भश्छन्दोमयः प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः।

बाहद, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान गरुड़ और विष्वक्सेन जी अपने नामोच्चारण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचाएँ।

श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, अयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सब प्रकार की आपत्तियों से बचाएँ।

यथाहि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः।

जितना भी कार्य अथवा कारण रूप जगत है, वह वास्तव में भगवान ही हैं - इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जाएँ।

तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः।

जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान का स्वरूप समस्त

विकल्पों-भेदों से रहित है, फिर भी वे अपनी मायाशक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं। यह बात निश्चित रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें!

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्त-
बहिर्भगवान् नारसिंहः।
प्रहापयल्लोकभय स्वनेन
स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः।

जो अपने भयंकर अट्टहास से सब लोकों के भय को भगा देते हैं और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान नृसिंह दिशा-विदिशा में नीचे-ऊपर बाहर-भीतर सब ओर हमारी रक्षा करें।

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्
विजेष्येस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान्।

देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हे यह नारायण कवच सुना दिया। इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य - यूथपतियों को जीत लेगे।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते।

इस नारायण कवच को धारण करनेवाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता अथवा पैर से छू देता है वह तत्काल समस्त भयों से मुक्त हो जाता है।

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित्।

जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत, पिशाचादि और बाघ आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता।

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः
योगधारणया स्वागं जहौ स मसधन्वनि।

देवराज! प्राचीन काल की बात है, एक कौशिक गोत्री ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योगधारणा से अपना शरीर मरुभूमि में त्याग दिया।

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा
ययौ चित्ररथः स्त्री र्भिवृतो यत्र द्विजक्षयः।

जहाँ उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके ऊपर से एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर बैठकर निकले। वहाँ आते ही वे नीचे की ओर किए विमान सहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। इस घटना से उनके आश्चर्य की सीमा न रही। जब उन्हें बालखिल्य मुनियों ने बतलाया कि यह नारायण कवच धारण करने का प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मण देवता की हड्डियों को ले जाकर पूर्व वाहिनी सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोक को आ गए।

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्।

परीक्षित्! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरूप जी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और वे त्रैलोक्यलक्ष्मी का उपभोग करने लगे।

नारायणाय पुरुषाय पुरातनाय
नारायणाय सुपथाय नमो नमस्ते।
नारायणाय मणिस्वासन संस्थिताय
नारायणाय शतवीर्यशताननाय!!

श्री वेंकटेश के यशोमुकुट

- श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण
मोबाइल - ९४४१२५४०६१

द्वापरयुग संघर्षण से निबट कर स्वामी श्रीमन्महाविष्णु अपनी देवेरी समेत ज्यों ही वैकुंठ पहुँच कर ज़रा-सा विश्राम फर्माया ही नहीं, त्योंही महर्षियों के भिजाने से आये भृगु ने उन्हें उछल कर छाती पर लात मार कर अप्रमत्त किया था! वह लात, वक्षःस्थल पर आराम फर्माती हुई माता जगज्जननी महालक्ष्मी देवी को जोरदार लग गयी थी! देखा तो - स्वामी इतनी बड़ी लात मारे हुए महर्षि के पाँव अपनी गोद में लेकर, ''आँह! कितना दर्द लगता होगा, महर्षि, मुझे लात मार कर!!?...'' कहते हुए पाँव सहलाते दिखाई पड़े। स्वामी भृगु महर्षि के पाँव ही सहलाते थे या उसके पाँव के तले हुए विशेष ज्ञान-नेत्र को खरोच कर निकाल देते ही था, मगर माँ लक्ष्मीदेवी को तो काफी गुस्सा आ गया था। माँ रूठ गयी! वह झट स्वामी के वक्षोसिंघासन से उतर कर भूतल पहुँच गयी। कोल्हापुर में विराजमान होकर, परिपूजित होने लगी!!

इधर भृगु चला गया। स्वामी ने अपनी देवेरी को सांत्वना देने के मन से अपना वक्ष टटोला, तो माता कहाँ?! - वह तो निकल गयी थी! गरुड़, शेष, चक्रत्ताळ्वार, शंख, चक्र, गदा, शारंग आदि भृत्यों ने वैकुंठ का छप्पा-छप्पा छान मारा, मगर माँ गायब!!? विकल मन से स्वामी भी भूलोक पहुँच गये - देवेरी को ढूँढते-ढूँढते। सब महर्षियों का खेला हुआ नाटक था! अनाथ कलियुग को तराने, एकल चरण के साथ लंगडाती हुई धर्म देवता को कलियुग पार कराने इन्होंने भृगु महर्षि को भेज कर, स्वामी तथा माता को धरातल पर बुलाया था!!

आकाशराज का मुकुट

ऐसे भूतल पधारे हुए श्रीनिवास से, कई युगों से अपने को पाने के लिए एकल चरण पर तपस्या करती हुई पीछा करती - लक्ष्मीदेवी की छाया और कन्याकुल - शिरोभूषण पद्मावती से मुलाकात हो गयी थी! अब की बार उन दोनों का ब्याह संपन्न हो गया!! मामाजी राजा आकाश के घर एक साल विराजमान था-श्रीनिवास। लाड-प्यार और चहल-पहल अंबर छू गयी। नारायणवर-क्षेत्र परम पावन बन गया था!

वैसे अपना दामाद कोई साधारण मनुष्य तो है नहीं। साक्षात् जगदानंदकारक वैकुंठ-वास जान कर, तेलुगु चोड-वंशज राजा आकाश ने, ''तीन लोक-पालक त्रिभुवन-सम्राट तुम हो! समस्त देवी-देवताओं के चक्रवर्ती हो!! लो, हमारे अपने इस छोटे-से मुकुट को पहन कर, अपना लोक-पालन करो, श्रीमन!!'' कहते हुए नव-रत्नों के खचित, बहु सुंदर, महा घन

एक सुवर्ण किरीट को श्रीनिवास के मूर्धन्य पर पहनाकर अमंद आनंद से कंदलित हृदय वाला बना था!! स्वामी ने भी उस मुकुट को चिन्मयानंद कंढलित मूर्ति बन कर धरा था!!

कलियुग के कल्याण कारी सार्वभौम का वही प्रथम किरीट था!!

सामवायी का किरीट

आन्ध्रप्रदेश में अनेकों रानियों-महरानियों, दानशील महिलामणियों का आविर्भाव हुआ था। प्रसिद्ध शातवाहन-वंश के चक्रवर्ती शातकर्णि की मातृमूर्ती गौतमीबालश्री सत्य-दान-अहिंसानिरता थी। वह तपो-दम-नियमोपवास तत्परा थी। राजर्षी-पत्नी की आवश्यक योग्यता पूरा उसमें निहित थी।

काकतीयों के जमाने में दुर्जयवंश में जन्मी कामसानी, एरुकसानम्मा आदि नारी-शिरोमणियों ने धर्मशालाओं, मंडपों, देवालयों का निर्माण कर, विद्यार्थियों को अन्न-वस्त्रों के लिए प्रबन्ध कर, भूदान आदि क्रतुओं का निर्वहण कर, इतिहास के पन्नों पर अपना धाक जमाया था!!

उसी श्रुंखला से संबन्धित आदर्शनारी-रतन है ''पल्लव-रानी सामवायी!'' तौंडैमंडल (कंची राजधानी वाला राज्य) को शासित पल्लव नरेश की महा लाड़ली व प्रियपत्नी इस वनितामाई ने तिरुमल श्री वेंकटेश की अनन्य भक्तिन थी। यातायात की सुविधा-विहीन उन दिनों में (सन् ५-६ सदियों में) तिरुमलगिरि के दुर्गम सातों पहाडों को पाँच बार अधिरोहित इस स्त्रीरतन ने स्वामी के मंदिर को सुशोभित ढंग से पुनःनिर्मित करने के साथ-साथ, भगवान श्री बालाजी को नवरत्न-खचित मुकुट के साथ, अनेकानेक तिरुवाभरण-संपत्ति का भी समर्पण कर अपार कीर्ति हासिल की!!

श्री स्वामीजी की चिरंतन सेवा में तरे आकाशराजा, राजा तोंडमान, वकुलमाता आदियों की पंक्ति में अपने कैंकर्यों के सहारे आसीन महा महिमान्वित महिला शिरोमणि है- पल्लव रानी सामवायी!!

श्री रामानुजस्वामीजी

तिरुमल श्रीनिवास को श्री वेंकटेश्वर के रूप में रूपित-निरूपित कर तिरुमल पहाड़ को शेषाचल बना कर दर्शित कर-वेदार्थामलच्छाया बना कर विलसित कराने वाले यतिराज-शिरोभूषण है श्रीमद्रामानुजाचार्य!!

रामानुजजी के बिना तिरुमल वैकुंठधाम नहीं। ऐसी प्रतीति हैं कि त्रेतायुग लक्ष्मण ही रामानुज बन कर अवतरित हो आये थे!!

''उन्दुमद कलिद्रन्! ओड़ाद तोल वलियन्!!'' (गोदा-विरचित तिरुप्पावै) गाते हुए प्रातःकाल भिक्षाटन के हिस्से में, गुरुवर पेरियनंबि शुभ-गृह के सामने गोदा-विरचित तिरुप्पावै के १८वें पाशुर के आलाप करने पर, महापूर्ण की पुत्री भिक्षा ला कर दरवाजा खोलती है। उस कन्या को साक्षात् गोदादेवी समझ कर, पारवश्य में बेहोश हुए कारण जन्म इस रामानुज ने - 'तिरुमलनाथ तेरे कहे अनुसार श्री महाविष्णु होने पर - उसके हाथों में शंख और चक्र कहाँ?' कह कर प्रश्न किये हुए तिरुपति के यादवराजा को बिना टटोलके, ''फुटकर युद्धों में काम आने के उद्धेश्य से उन दोनों को अपने भक्त राजा

श्री रामानुजाचार्य

तिरुमल देवस्थान में श्री रामानुजाचार्यजी के द्वारा किये गए कुछ उल्लेखनीय सुधार इस प्रकार हैं :

श्री रामानुजाचार्यजी ने गर्भालय शिखर (विमान गोपुर) कि श्रेष्ठता एवं पवित्रता बनाये रखने के लिए आगम शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार शिखर (विमान) के चारों ओर उचित मूर्तियाँ स्थापित करवाए। और अपने द्वारा निरूपित और सुनिश्चित किये गये रीति रीवाज़ों को विचलन के बिना पालन करने के लिए एक संन्यासि को बडा जीयर के पदनाम से नियुक्त किया। श्री रामानुजाचार्यजी ने नित्य पूजा, पुनस्कार, अनुष्ठान, त्यौहार इत्यादि श्रीवैष्णव परंपरा के अनुसार होने के लिए और उसके स्थायी प्रदर्शन और पर्यवेक्षण के लिए एक मज़बूत आधारशिला रखी।

श्री रामानुजाचार्यजी ने तिरुमल में पहली बार निम्न एवं नीचे वर्ग तथा कुल के लोगों को पवित्र तिरुमल पहाड़ियों पर चढ़ने और भगवान श्री वेंकटेश जी के दर्शन करने के लिए अनुमति दी। रामानुजाचार्यजी ने ही पांचरात्र आगम शास्त्र पध्दति में पूजा कैंकर्य का प्रवेश किया था और आज भी उसी क्रमानुसार चल रहा होता।

तोंडमान् को दे दिया है, राजन!!'' कह कर समाधान दे कर, समन्वय बनाकर - बेजोड़ ढंग से तिरुमल पहाड़ को कलियुग-वैकुंठ घोषित कराया था!! भगवद्रामानुज युग प्रवक्ता था!

रामानुज भारतीय तत्वचिंतना में एक विशेष पहचान है। वह विशिष्ट अद्वैत सिद्धान्तकर्ता था।

भगवद्रामानुज के संबन्ध में यह प्रतीति हैं कि उसने अपने साथ अशेष जनवाहिनी के साथ, विशेष धन-राशियों को भी मलयप्पाजी को भेंट के रूप में तिरुमल पहाड़ पर ला दिया था! सुवर्ण शंख और चक्रों के साथ, नवरतन-मंडित मुकुट आभरण को भी उसका श्री वेंकटेश भगवान को समर्पित करने का ऐतिह्य है!!

श्रीकृष्णदेवराय के मुकुट

आश्चर्य चकित कर देनेवाले आभूषण

घना वेंकटेश्वर जी के नख शिख पर्यंत अनेक दिव्याभरण, मणिहार आदि भक्तों को आश्चर्य चकित कराते हैं और स्वामी को शोभा बढाते हैं। ऐसे जगमगाहट के आभूषण अनेक हैं।

स्वर्ण पद्म पीठम्, स्वर्ण पाद कवच, स्वर्ण पीतांबर, स्वर्ण नंद खड्ग, वज्रालंकृत सूर्यकठारी, वैकुंठहस्त(वरदहस्त), कटिहस्त, स्वर्ण कवच, नवरत्नों से बनाएँ हुए हार, चार लडी वाली सहस्रनाम मालाएँ, वज्र मुकुट, मकर तोरण ऐसा अनेकानेक अपूर्व व अद्भुत आभूषण हैं।

भारत के इतिहास में चन्द्रगुप्तमौर्य, समुद्रगुप्त, खाखेल, विष्णुकुंडिन माधव वर्मा, करिकालचोल - जैसे योधा, धीर-पुरुष, विजयनगर के सम्राट श्रीकृष्णदेवराय है!! वह आन्ध्रभोज बिरुदांकित तथा बिना थके अविश्रांत योधा था!!

बड़े साहस पुरुष, खड्गवीर श्रीकृष्णदेवराय को तिरुमल वेंकटेश जी पर अपार भक्ति, विश्वास और श्रद्धा होती थी। स्वयं खड्ग-धारण कर, अप्रमेय बल-विलसित सेना समूह का संचालन कर, शत्रुवीरों के कलेजों में मृत्युनाद प्रतिध्वनित करने वाले आप नहीं-बल्कि गंडशिला-सदृश हो, मनोहराकृति के साथ, ब्रह्मांड मौन-मुद्रा के साथ जगद्वीक्षण करते हुए खड़े श्री वेंकटेश्वर ही महाबली जानने वाला महाभक्त व परिपूर्ण विश्वासी है श्रीकृष्णदेवराय!!

अपने जीते हर बार, अपने को जिताए हुए श्रीवेंकटाद्रि के देव को कृष्णराय की समर्पित भेंट और उपहार अपार और अनगिनत हैं!

कृष्णराय ने कुल ७ बार तिरुमलगिरि का अकेले और सपरिवार संदर्शित करने की बात को इतिहास ने दर्ज कर रखा है!

तिरुमलगिरि के अधिदेवता को श्रीकृष्णदेवराय के द्वारा समर्पित भेंट और उपहार-

क्रमांक	साथ में हुए लोग	समर्पित उपहार
१.	देवेरियाँ-तिरुमलदेवी, चिन्नादेवी	नवरत्न-खचित किरीट, २५ चाँदी की थालियाँ, दोनों देवेरियों-द्वारा स्वामीजी के नैवेद्य-सेवा के लिए दो सुवर्ण पान-पात्र
२.	अकेले	उत्सवमूर्तियों को किरीट और इतर कीमती आभरण
३.	अकेले	मातृमूर्ति नागांबिका, पिता नरस-नायक के संस्मरणार्थ आलय में नित्य-नैवेद्य, संवत्सर महोत्सवों के निर्वहण-हेतु ५ ग्रामों का दान
४.	देवेरियाँ-तिरुमलदेवी, चिन्नादेवी	३० हज़ार वरहाओं से स्वामी का कनकाभिषेक, तिरुमलदेवी का अंगाभरण समर्पण, चिन्नादेवी का कंठहार, पदकों का समर्पण
५.	विजयनगर से ही	नवरत्न प्रभावली, मकर तोरण
६.	-	स्वामी को कंठमाला, पदक, आनंदनिलय विमान को स्वर्ण-लेपने के लिए ३० हजार वरहाएँ, आलय में अनेक उत्सवों का प्रभंद, निर्वहण केलिए अनेक दान
७.	मात्र तिरुमलदेवी (लगता है तब तक चिन्नादेवी का देहांत हो गया हो)	पुत्र तिरुमलराय की ओर से अनेकों उपहार
८.	तिरुमलदेवी	नवरत्न-खचित पीतांबर, नवरत्न गुँथी टोपी, चामर-२, नवरत्न पदक, १००० वरहाएँ, तिरुमलदेवी की तरफ से पदक

देवदेव को इतोधिक भेंट समर्पित कर, नित्य दीप-धूप-नैवेद्यों के लिए यथाशक्ति धन-धान्य-संपत्ति समेट कर, इस कलियुग के शरणागत रक्षक को इस युगांत तक देदीप्यमान हो सुलगने देना श्रीकृष्णदेवराय का कृतनिश्चय है!!

श्रीकृष्णदेवराय की ये तिरुमल की यात्राएँ, उन दिनों के जनसामान्य में भक्ति के प्रति महान् चेतना के लाने में कोई अतिशयोक्ति नहीं! - ''इतने महाप्रभु ने ही तिरुमलराय के आगे अपना घुटन टेका, तो उसकी बड़ी ही महत्ता होगी!!'' कह कर उन दिनों की देशीय प्रजा का अभिप्राय था!

जितनी संपत्ति तिरुमलराय को कृष्णराय ने समर्पित किया हुआ है, उतना अन्य किसी प्रभुवर ने कतई नहीं किया था। उसने स्वामी को नवरत्न-खचित किरीट, उत्सवमूर्तियों के उन गोलाकृत उन कुंभ-रूपी किरीटों के अलावा - महान् कीमतीदार हीरे, मोती, माणिक, वैडूर्य, गोमेधिक आदि समर्पित कर तर गया!!

समापन

तिरुमल-धाम के तिरुवेंकटनाथ कलियुग कल्याण-कामना सम्राट रहा है। कलियुग के तारण करने साहब, साक्षात् वैकुंठ ही को परिवार-समेत शेषाचल पर उतार कर, इस समस्त भुवन का पालन कर रहा है!! उसके नेतृत्व में इन्द्र, यम, वायु, वरुण, कुबेर आदि दिक्पति - एक पादवाली धर्म-देवता को कलियुग पार कराने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं!! भगवान बालाजी सर्व-सहा-चक्रवर्ति है! अतएव-आकाशराजा से लेकर अनेकों भक्त-शिखामणि, उसे सम्राट मानकर, ला-लाकर बहुमूल्य किरीट समर्पित कर रहें हैं!! मगर श्रीस्वामीजी के सहस्र शीर्ष हैं! अब और भी किरीट या मुकुट उनकी कीरति, महिमा, कारुण्य-संपदा, आर्त्तत्राण-परायणता के लिए - और भी असंख्य रीति में समर्पित किये जाने का आवश्यकता हैं! अस्तु!!

तिरुपति बालाजी

स्वर्णाभूषण से सुसज्जित, दर्शन से मन भाये
एक बार दर्शन कर ले, बार-बार वह आये।

भक्तों की भक्ति देख कर, श्रद्धा होती है मन में
कठिन मार्ग पर्वत का, पर कष्ट न होता तन में।

पर्वत पर बिराजते हैं, खूब स्वच्छता छायी
बच्चे, युवा आते हैं, बूढा-बूढ़ी भी आयी।

सेवा भावना से लोग, यहाँ हैं लगे हुए
अनजान नहीं लगता, आते सब सगे हुए।

पारम्परिक पूजा होती, दान बहुत करते हैं
सौगुना उससे मिल जाता, सबका दुःख हरते हैं।

एक बार के दर्शन से, मन में छाये हर्ष,
जीवन सफल हो जाये, भर जाये उत्कर्ष।

तिरुपति पहुँच कर, साधन बहुत है आने का
इंतजाम सभी है, रहने और खाने का।

तीर्थों का सरताज है, काबेरी हो या गंगा
बालाजी के दर्शन से मन हो जाता चंगा।

- श्री अंकुश्री

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव
२०२० अक्तूबर १६ से २४ तक

१६-१०-२०२०
शुक्रवार
दिन - स्वर्ण तिरुच्चि उत्सव
रात - महाशेषवाहन

१७-१०-२०२०
शनिवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

१८-१०-२०२०
रविवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

१९-१०-२०२०
सोमवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

२०-१०-२०२०
मंगलवार
दिन - पालकी में
मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

२१-१०-२०२०
बुधवार
दिन - हनुमन्तवाहन
रात - गजवाहन

२२-१०-२०२०
गुरुवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

२३-१०-२०२०
शुक्रवार
दिन - स्वर्णरथोत्सव
रात - अश्ववाहन

२४-१०-२०२०
शनिवार
दिन - चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव

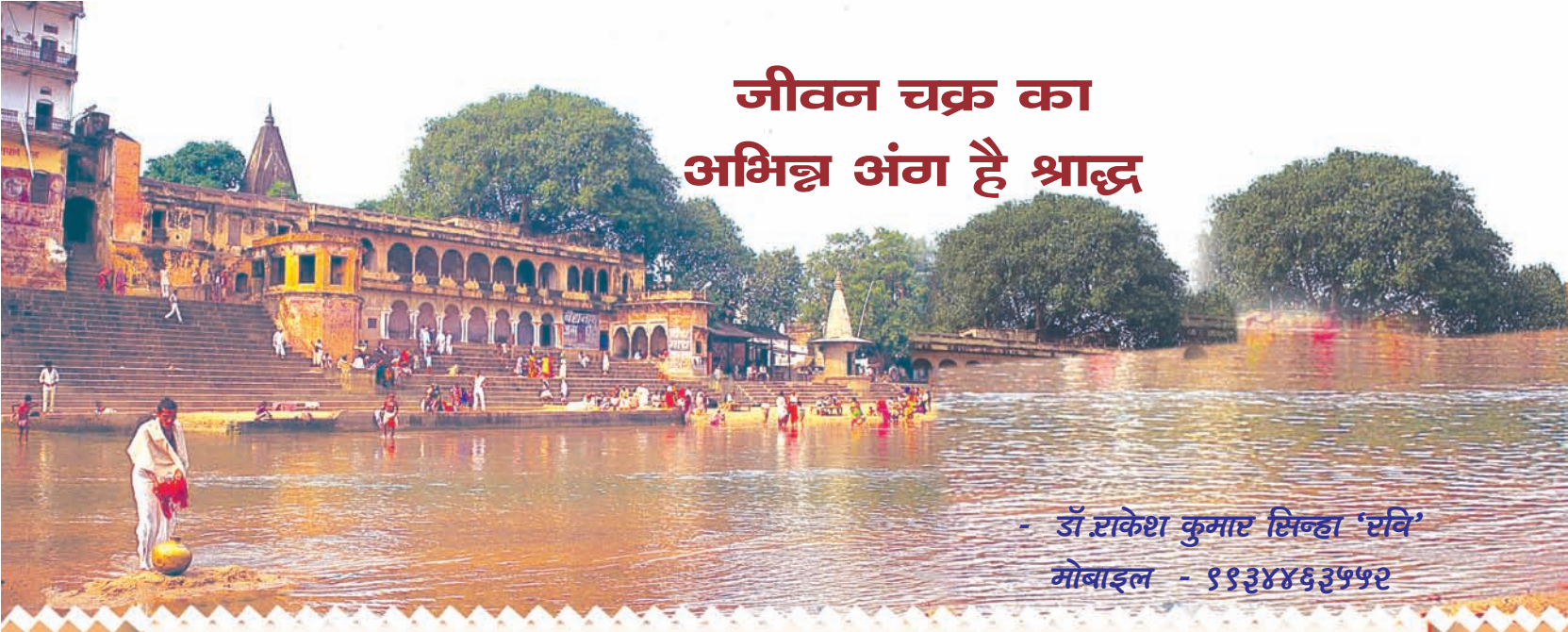

जीवन चक्र का अभिन्न अंग है श्राद्ध

- डॉ.राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'
मोबाइल - ९९३४४६३५५२

अष्टादश पुराणों में एक ब्रह्म पुराण के श्राद्ध प्रकाश में अंकित हैं कि जो उचित काल, पात्र एवं स्थान के अनुसार शास्त्रोचित विधि द्वारा पितरों को लक्ष्य करके श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को दिया जाता है वह श्राद्ध है। मनुस्मृति (३/२८४) में स्पष्ट है कि मनुष्य तीन पूर्वज जैसे पिता, पितामह एवं प्रतिपामह कम से वसुओं, रुद्रों एवं आदित्यों के समान है और श्राद्ध करते समय इनको पूर्वजों का प्रतिनिधि माना गया है। अग्नि पुराण (१६३/४०-४१) के अनुसार पितर लोग वसु, रुद्र एवं आदित्य, जो श्राद्ध के देवता हैं, श्राद्ध से संतुष्ट होकर मानवों के पूर्व पुरुषों को तृप्ति प्रदान करते हैं। तभी तो श्राद्ध की परम्परा भारतीय समाज में आदि अनादि काल से स्थापित व जीवन्त है।

वैदिक साहित्य में 'पितृ' शद्ब का अंकन कितने ही स्थानों पर है। ऋग्वेद (१०/१५/१) में पितृगण निम्न, मध्यम एवं उच्च तीन श्रेणियों के बताए गए है। तैत्तरीय ब्राह्मण (१/३/२-५) में स्पष्ट अंकित हैं कि पितर लोग जिस लोक में निवास करते है वह भूलोक और अंतरिक्ष के उपरांत है। पितरों के लिए श्रद्धापूर्वक हम जो कुछ भी अर्पण करते हैं उसे अग्नि देव उनके निकट पहुँचा देता है तभी तो सूर्यास्त के बाद यह अनुष्ठान नहीं किया जाता।

अथर्वणवेद (१८/४/८०/७९) में स्पष्ट किया गया हैं कि पृथ्वी पर रहने वाले अन्तरिक्ष में स्थित देवलोक के वासी, पितृगणों को स्वधा के द्वारा श्रद्धासुमन सम्प्रेषित किया जाना चाहिए और पुनः आगे (१९/२/४९) में आया है कि हमारे जो पिता व वृद्धप्रपिता हमारे दृष्ट्यतीत हो चुके है, अंतरिक्ष प्रविष्ट हो गये हैं, जो पृथ्वी पर हैं उनके लिए पिण्ड व श्राद्धा सुमन समर्पण अति आवश्यक है।

जिन पितरों की कृपा से वंशवर्तिनी मुक्ति मानी गयी है उनके द्वारा अभय देने से श्राद्ध कार्य की पूर्ति है। बौधायन धर्मसूत्र (२/८/१) का वर्णन हैं कि जो पितृ कर्म करता है उसे दीर्घायु, स्वर्ग, यश एवं समृद्धि प्राप्त होती है। वायुपुराण के गया माहात्म्य के (३/१४/१-४) में स्पष्ट किया गया हैं कि जो कोई श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करता है तो वह ब्रह्म, इन्द्र, रुद्र एवं अन्य देवों, ऋषियों, मानवों, पशुओं, पक्षियों रेगनेवाले जीवों, पितरों के समुदाय तथा उन सभी को जो जीव कहे जाते हैं, सहित सम्पूर्ण विश्व को प्रसन्न करता है।

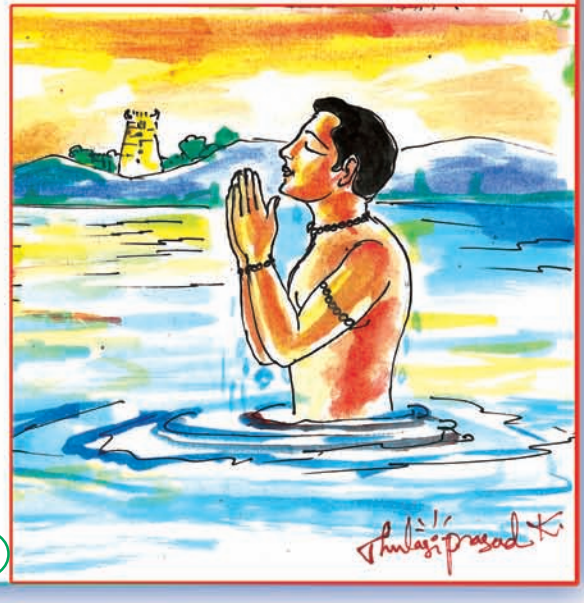

ऐसे तो सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में कितने ही तीर्थों से श्राद्ध पिण्डदान के कर्मकृत्य किए जाने का विधान है। पर उनमें गयाजी उत्तमोत्तम माना गया है। वशिष्ठ धर्मसूत्र (१११/४२) में स्पष्ट अकिंत हैं कि कृषक जैसे सुवृष्टि से प्रसन्न होते हैं, वैसे ही गया में पिण्डदान से पितर प्रसन्न होते हैं। महाभारत के वनपर्व (८७/१०-१२) में स्पष्ट अंकित हैं कि व्यक्ति को बहुत से पुत्रों की अभिलाषा करनी चाहिए क्योंकि उनमें से कोई गया जाता है तो पितर स्वतः तृप्त हो जाते हैं। पद्म पुराण के सृष्टिखंड का स्पष्ट उल्लेख हैं कि हमारे वंश में जो गया जाएगा वह सभी पीढ़ियाँ व आगामी सात पीढ़ियों को भी तृप्त कर देगा। नारद पुराण के उत्तर भाग में अंकित हैं कि हे! सुभाग्ये महापापकर्त्ता पातकी भी जो पितृ कर्म का अधिकार रखता हो 'गया' का दर्शन एवं श्राद्ध करने से ब्रह्मलोक पा जाता है।

गदाधारी विष्णु जी का जाग्रत तीर्थ गया से ऐसे तो सालों भर श्राद्ध पिण्डदान होता रहता है पर हरेक वर्ष भाद्रपद पूर्णिमा से अमावास्या तक का काल जिसे पितृपक्ष कहा जाता है, गया तीर्थ में अनुष्ठान का सर्व विशिष्ट महत्व है। इस अवधि में पितृगण 'गया श्राद्ध' के लिए आस लगाए रहते हैं। सचमुच इहलोक का पवित्र पुनीत धार्मिक अनुष्ठान है गया श्राद्ध जो लोक-परलोक दोनों के लिए सुखकारी है।

कूर्म पुराण के उपरिविभाग के अध्याय २० श्राद्ध प्रकरण के अनुसार नक्षत्र, दिवस व वारों में श्राद्ध का पुण्य फल

सोमवार	-	सौभाग्य वृद्धि
मंगलवार	-	संतति की प्राप्ति
बुधवार	-	शत्रु नाश
गुरुवार	-	धन प्राप्ति
शुक्रवार	-	समृद्धि की प्राप्ति
शनिवार	-	आरोग्य सुख
रविवार	-	यश प्राप्ति

प्रतिपदा	-	धन लाभ
द्वितीया	-	आरोग्य
तृतीया	-	संतति की प्राप्ति
चतुर्थी	-	शत्रु नाश

श्रीहरि हुण्डी

तिरुमल मंदिर में प्रप्रथम दि. २५.०७.१८२१ को हुण्डी की स्थापना की गयी है। बाद में दि. २५.०७.१८२५ को 'सिरि कोलुवु' का नामकरण कर, हुण्डी (धातु निर्मित बडा बर्तन) को सफेद वस्त्र में लपेट कर ९' की ऊँचाई पर रखा गया है। तदनंतर हमारे परिवार को आनुवंशिक रूप में उत्तरदायित्त्व सौंपा गया। 'अन्नमय्या अरै' के ठीक सामने एवं दक्षिणी दिशा में एक कमरे के मध्य भाग में 'हुण्डी' को रखा गया है। यह कमरा ''मुक्कोटि प्रदक्षिणा'' प्राकार के ''तिरुमामणि मण्डप'' का अंतर्भाग है। इस 'हुण्डी' का ३' बंटा २' के पीतल लोहे से निर्माण किया गया है। इस चौडे मुँह वाले बर्तन के नीचे से लेकर ऊपर तक सफेद वस्त्र लपेट कर ९' की ऊँचाई पर, कमरे के उपरितल से बांधकर भक्तों को चारों ओर से भेंट डालने के लिए सुविधापूर्वक खुला रखा गया है।

पंचमी - लक्ष्मी प्राप्ति
षष्ठी - पूज्यता प्राप्ति
सप्तमी - गणों का अधिपत्य प्राप्ति
अष्टमी - उत्तम बुद्धि की प्राप्ति
नवमी - उत्तम स्त्री की प्राप्ति
दशमी - कामना पूर्ति
एकादशी - वेद ज्ञान की प्राप्ति
द्वादशी - सर्वत्र विजय
त्रयोदशी - दीर्घायु व ऐश्वर्य प्राप्ति
चतुर्दशी - अपघात से हुए मृतकों की तृप्ति
अमावास्या - कामना पूर्ति व स्वर्ग की प्राप्ति

अश्विनी - अश्व प्राप्ति
भरणी - आयु वृद्धि
कृत्तिका - स्वर्ग प्राप्ति
रोहणी - तेजस्वी संतान
मृगशिरा - ब्रह्मतेज
आर्द्र - कार्य सिद्धि
पुनर्वसु - भूमि की प्राप्ति
पुष्यमि - लक्ष्मी की प्राप्ति
आश्लेषा - कामना पूर्ति
मघा - संतान व पुष्टि
पूर्वफल्गुनी - पाप का नाश
उत्तरफल्गुनी - श्रेष्ठ संतान
हस्त - कुल में श्रेष्ठता
चित्रा - बहुत से पुत्रों की प्राप्ति
स्वाति - व्यापार सिद्धि
विशाखा - बहुमूल्य धातुओं की प्राप्ति
अनुराधा - मित्र लाभ
ज्येष्ठा - प्रभुत्व की प्राप्ति
मूल - मुक्ति
पूर्वाषाढ - समुद्र यात्रा सफल
उत्तराषाढ - कामना सिद्धि
श्रवण - श्रेष्ठता की प्राप्ति
धनिष्ठा - सर्वकामना पूर्ति
शतभिषा - परमबल
पूर्वभाद्रपद - धातुओं की प्राप्ति
उत्तराभाद्र - शुभ ग्रह
रेवती - गऊ की प्राप्ति

शिलातोरण

भूगर्भ शास्त्रज्ञों की गणना के अनुसार ये शिलातोरण १५० करोड वर्ष पुराना है। इतनी दीर्घकाल तक प्राकृतिक वैपरित्यों की सामना करते हुए, अपनी सहजता को खोये बिना खडा रहा। मौसम में होनेवाले परिवर्तनों तथा जल प्रवाह की घटिरिवियों के कारण यह आकार बना हुआ है। इसकी लम्बाई २५ फीट और ऊँचाई १० फीट हैं। भक्तों का विश्वास हैं कि इस शिलातोरण के मार्ग द्वारा एक कि.मी. दूरी पर स्थित वर्तमान मंदिर में स्वयंभू अर्चामूर्ति के रूप में आकर, विराजमान हैं। इस अद्भुत घटना के लिए यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

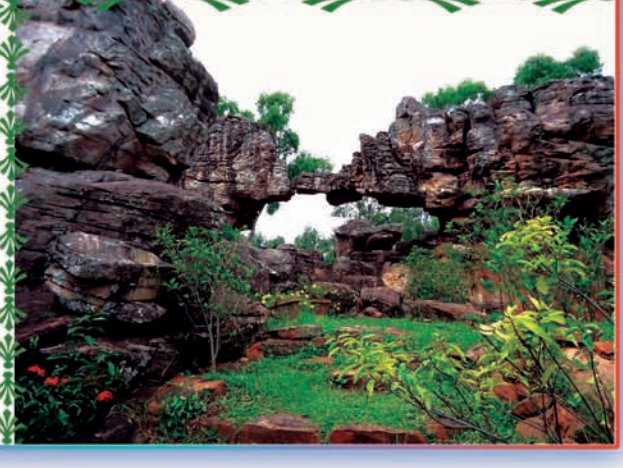

नायनाराच्चान्पिल्लै

- श्री अनुज कुमार अगर्वाल
मोबाइल - ९१७८१७६६६६

जन्म नक्षत्र : आवणि (श्रावण), रोहिणी नक्षत्र (यतीन्द्र प्रवणं प्रभावं में चित्रा नक्षत्र दर्शाया गया है)

अवतार स्थल : श्रीरंगम

आचार्य : श्री पेरियवाच्चान पिळळै

शिष्य : श्री वादिकेसरी अलगिय मणवाल जीयर, श्री रंगाचार्यर्, परकाल दासर आदि

परमपद प्राप्त स्थान : श्रीरंगम

रचनाएँ : चरमोपाय निर्णयं, अनुत्व पुरुष्कारत्व समर्थनम्, ज्ञानार्नवं, मुक्त भोगावली, आलवन्दार के चतुःश्लोकी व्याख्यानः, पेरियवाच्चान पिळळै के विष्णु शेषी श्लोक का व्याख्यान, तत्व त्रय विवरण, कैवल्य निर्णयं आदि।

नायनाराच्चान्पिल्लै श्री पेरियवाच्चान पिळळै के दत्तक पुत्र थे। उनका नाम अलगिय मनावाल पेरुमाल नायनार् (सुंदर वर राजाचार्य) था। परकाल दासार की कृति परकाल नल्लान रहस्य में उन्हें सौम्यवरेश्वर नाम से संबोधित किया गया है। उन्हें ''श्री रंगराज दीक्षितर्'' के नाम से भी जाना जाता है और वे एक विद्वान व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने सत् संप्रदाय के सिद्धांतों की स्थापना के लिए कई ग्रंथों की रचना बहुत प्रमाणिकता से की है।

उनकी रचनाएँ संप्रदाय के प्रमुख सार को प्रदर्शित करती है। उनके द्वारा रचित चरमोपाय निर्णय, एम्पेरुमानार और संप्रदाय में उनकी विशेष स्थिति के वास्तविक गौरव को दर्शाती है। अपनी चतुःश्लोकी के व्याख्यान में, उन्होंने बड़ी स्पष्टता से पेरिय पिराट्टी के गुणों को विस्तार से बताया है। प्रमेय रत्नम् (वादिकेसरी अलगिय मणवाल जीयर के शिष्य यामुनाचार्य द्वारा रचित) में यह बताया गया हैं कि नायनाराच्चान्पिल्लै ने मुक्त भोगावली की रचना बहुत ही छोटी आयु में की थी और उसे पेरियवाच्चान पिळळै को दिखाया था। उस रचना की गहराई को जानकर, पेरियवाच्चान पिळळै उनकी बहुत सराहना करते हैं और उन्हें विस्तार से हमारे संप्रदाय के सार का अध्यापन शुरू करते हैं। यद्यपि वादिकेसरी अलगिय मणवाल जीयर, श्री रंगाचार्यर्, परकाल दासार आदि पेरियवाच्चान पिळळै के शिष्य हैं परन्तु उन्होंने भगवत विषय आदि का अध्ययन नायनाराच्चान्पिल्लै के सानिध्य में किया।

इस तरह हमने नायनाराच्चान्पिल्लै के गौरवशाली जीवन की कुछ झलक देखी। वे महान विद्वान थे और पेरियवाच्चान पिळळै के बहुत प्रिय थे। हम सब उनके श्रीचरण कमलों में प्रार्थना करते हैं कि हम दासों को भी उनकी अंश मात्र भागवत निष्ठा की प्राप्ति हो।

नायनाराच्चान्पिल्लै की तनियन

श्रुत्यअर्थसारजनकं स्मृतिबालमित्रम।
पद्मोल्लसध भगवदंघ्री पुराणभंधुम्।।
ज्ञानाधिराजं अभयप्रदराज सूनुम।
अस्मत् गुरुं परमकारुणिकं नमामि।।

रंगमंडप

आइनेमंडप के सामने स्थित कृष्णरायमंडप की दक्षिण दिशा की ओर ऊँचे शिलावेदिका पर निर्मित सुविशाल मंडप ही रंगनायक मंडप या रंगमंडप है। इस छोटे मंडप में भगवान श्रीरंगनाथ ने कुछ समय तक ठहर कर पूजाएँ स्वीकार किया। ई.स.१३२०-१३६० वर्षों के बीच मुसलमानों की चढ़ाई के कारण श्रीरंगक्षेत्र में विराजमान श्रीरंगनायक की उत्सवमूर्तियों की तिरुमल लाकर, इस मंडप में सुरक्षित करके, नित्य पूजाएँ मनायी गयीं। श्रीरंगनाथ के तिरुमल स्थित इस मंडप में रहते समय तिरुप्पावै पठन, उत्सवों व अन्य सेवाओं में द्राविड दिव्यप्रबंध पारायण को तिरुमल श्री बालाजी की सन्निधि में प्रारंभित किया गया।

श्री पेरियवाच्चान पिळ्ळै

- श्रीमती शकुंतला उपाध्याय
मोबाइल - ९०३६८८१०८६

तिरुनक्षत्र : श्रावण मास, रोहिणि नक्षत्र

अवतार स्थल : सेंगनूर

आचार्य : नम्पिळ्ळै

शिष्य : नायनाराचान पिळ्ळै, वादि केसरि अळगिय मणवाळ जीयर्, परकाल दास इत्यादि।

पेरियवाच्चान पिळ्ळै, सेंगनूर में, श्री यामुन स्वामीजी के पुत्र ''श्रीकृष्ण'' के रूप में अवतरित हुए और पेरियवाच्चान पिळ्ळै के नाम से प्रसिद्ध हुए। श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के प्रधान शिष्यों में से वे एक थे और उन्होंने सभी शास्त्रार्थों का अध्ययन किया। श्री कलिवैरिदास स्वामीजी के अनुग्रह से पेरियवाच्चान पिळ्ळै सम्प्रदाय में एक प्रसिद्ध आचार्य बने। पेरिय तिरुमोळि ७.१०.१० कहता हैं कि- तिरुक्कण्णमंगै एम्पेरुमान की इच्छा थी कि वे श्री परकाल स्वामीजी के पाशुरों का अर्थ उन्हीं से सुने। अतः इसी कारण, कलियन श्री कलिवैरिदास स्वामीजी बनके अवतार लिए और भगवान पेरियवाच्चान पिळ्ळै का अवतार लिए ताकि अरुलिचेयळ के अर्थ सीख सके। पेरियवाच्चान पिळ्ळै व्याख्यान चक्रवर्ति, अभय प्रदराजर इत्यादि नामों से भी जाने जाते हैं। पूर्वाचार्यों के अनुसार, उन्होंने नायनाराचान पिळ्ळै को दत्तक लिया था।

इनके जीवित काल में, इन्होंने निम्न लिखित ग्रंथों की व्याख्या किया है :

१) ४००० दिव्यप्रबन्ध - आप श्रीमान ने हर एक अरुळिचेयळ की व्याख्या लिखी है। लेकिन पेरियाळ्वार तिरुमोळि के लग भग ४०० पाशुर नष्ट होने से, श्री वरवर मुनि स्वामीजी ने सिर्फ उन पाशुरों की व्याख्या लिखे।

२) स्तोत्र ग्रन्थ - पूर्वाचार्य के श्री सूक्ति जैसे स्तोत्र रत्न, चतुःश्लोकी, गद्य त्रय इत्यादि और जितने स्तोत्र पर व्याख्यान लिखा।

३) श्री रामायण - श्री रामायण के कुछ मुख्य श्लोक चुन के उन श्लोकों का रामायण तनि श्लोकि में विस्तार से विवरण किया। विभीषण शरणागति के वृत्तान्त के विवरण के लिए इन्हें अभय प्रदराजर करके गौरवान्वित किया गया था।

४) इन्होंने कई रहस्य ग्रंथ जैसे माणिक्क मालै, परंत रहस्य, सकल प्रमाण तात्पर्य इत्यादि (जो रहस्य त्रय से प्रतिपादित विषयों को अद्भुत रूप से समझाती है) कि रचना की। रहस्य त्रय को लिखित प्रमाण करने में आप श्री सर्वप्रथम हैं। श्री पिळ्ळै लोकाचार्य ने श्री कलिवैरिदास स्वामीजी और पेरियवाच्चान पिळ्ळै के उपदेशों के अनुसार अपना अष्टादश रहस्य ग्रंथों की रचना किये है।

इनकी अरुळिचेयळ और श्री रामायण में निपुणता का प्रमाण इनसे लिखे गए पाशुर पड़ि रामायण ही है जिसमें केवल अरुळिचेयळ के शब्द उपयोग से पूरे श्री रामायण का विवरण सरल रूप में प्रस्तुत किया है।

वादि केसरि अळगिय मणवाळ जीयर् के वृत्तांत से हमें इनकी अनुग्रह का महत्व जानने को मिलता है। अपने

ओडु में नैवेद्य

भोजन प्रिय स्वामी श्रीनिवास नित्य 'बिना साफ किये थाली' में भोग लेते हैं। एक बार भोगने के बाद उस थाली को फेंक देते हैं। फिर दूसरी बार नया थाली का उपयोग करते हैं। यह बडी अजीब की बात हैं कि वह थाली मिट्टी की है और वो भी फटा हुआ बर्तन। इसको **'ओडु'** कहते हैं। भगवान श्री बालाजी हर रोज सिर्फ फटा हुआ पात्र में ही भोग लेते हैं। ऐसी आनंदनिलयवासी के वैभव को समझकर भक्तजन आश्चर्य चकित होते हैं।

पूर्वाश्रम में जीयर पेरियवाच्चान पिळ्ळै के रसोई (तिरु मडपळ्ळ) में सेवा करते थे। वे अनपढ़ थे लेकिन अपने आचार्य के प्रति अपार भक्ति था। वेदांत विषय के बारे में कुछ श्रीवैष्णव चर्चा करते समय, चर्चा की विषय के बारे में इन्होंने पूछ-ताछ की। इन्हें अनपढ़ और गवार समझ के उन्होंने घमंड से जवाब दिया की ''मुसल किसलयम्'' (नव खिला लोढ़ा) नामक ग्रंथ के बारे में चर्चा कर रहे हैं। अपने आचार्य के पास जाके घटित संघठन को सुनाते हैं और पेरियवाच्चान पिळ्ळै दया करते हुए निश्चित करते हैं कि उन्हें सब कुछ सिखायेंगे। थोड़े साल बाद, शास्त्र के विद्वान, वादि केसरि अळगिय मणवाळ जीयर् बन के सम्प्रदाय के कई ग्रंथों कि रचना की।

जैसे पेरिय पेरुमाळ, पेरिय पिराट्टि, पेरिय तिरुवडि, पेरियाळ्वार और पेरिय कोयिल, आच्चान पिळ्ळै भी अपनी महानता के कारण पेरियवाच्चान पिळ्ळै नाम से प्रसिद्ध हुए। पेरियवाच्चान पिळ्ळै के लिए अपने उपदेश रत्न माला में श्री वरवरमुनि स्वामीजी २ पाशुर समर्पित करते हुए कहते हैं -

पाशुर : ४३

नम्पिळ्ळै तम्मुडैय नल्लरुळाल् एवियिडप्
पिन् पेरियवाच्चान पिळ्ळै अतनाल्
इन्बा वरुबति मारन् मरैप् पौरुळै चोन्नतु
इरुपतु नालायिरम्

सरल अनुवाद : अपने कारुण्य से श्री कलिवैरिदास स्वामीजी ने पेरियवाच्चान पिळ्ळै को तिरुवाय मोळि का व्याख्यान लिखने का आदेश दिया। उसे ध्यान में रखते हुए वेद का सार तिरुवाय मोळि का अत्यन्त मनोरंजनीय व्याख्यान पेरियवाच्चान पिळ्ळै ने रचना किया। यह व्याख्यान श्री रामायण (२४००० श्लोक) की तरह २४००० पड़ि से रची गई।

पुष्पकैंकर्य (पुष्प-सेवा)

भगवान श्री वेंकटेश्वर पुष्प प्रेमी है। पहाडों पर जितने फूल हैं वे सभी उनकी पूजा के लिए ही हैं। दूसरा कोई फूलों का उपयोग नहीं करना है। इसलिए तिरुमल क्षेत्र 'पुष्पमंडपम्' नाम से भी पुकारा जाता है। हजार वर्षों पूर्व से ही अनंताल्वार स्वामी श्रीनिवास के पुष्प-सेवा में भाग लेते हैं। वे भगवद्रामानुजाचार्य जी के शिष्य थे।

पाशुर : ४६

पेरियवाच्चान पिळ्ळै पिन्बुळ्ळवैक्कम्
तेरिय व्याकियैगळ् चेय्वाल्
अरिय अरुळिच्चेयल् पोरुळै आरियर्गट्किप्पोतु
अरुळिच्चेयलाय्त् तरिण्तु

सरल अनुवाद : पेरियवाच्चान पिळ्ळै की अरुळिचेयळ व्याख्यान से ही, महान आचार्य पुरुष अरुळिचेयळ का अर्थ समझकर अरुळिचेयळ के सही अर्थों का प्रचार कर रहे हैं। इनके व्याख्यान के बिना, अरुळिचेयळ के निगूढ़ अर्थों की चर्चा भी नहीं कर सकेगा।

मामुनिगळ, अपने पाशुर ३९ में आप श्रीमान की गणना तिरुवाय्मोळि के पांच व्याख्यान कर्तावों में करते हुए कहते हैं- आप श्रीमान ने स्वयं अपने ग्रंथ का संरक्षण किया और तत्पश्चात इसी का प्रचार और प्रसार भी किया। क्योंकि इसके बिना अरुळिचेयळ के निगूढ़ अर्थों को समझना असम्भव है।

वार्तामाला ग्रन्थ और पूर्वाचार्य के ग्रंथों में इनके जीवन के अनेक घटनाओं के बारे में प्रस्ताव किया गया है। आईये इनमें से कुछ अब देखेंगे -

१) किसी ने इनसे पूछा ''क्या हम एम्पेरुमान की कृपा के पात्र हैं या लीला के पात्र हैं?'' - पेरियवाच्चान पिळ्ळै

जवाब देते हैं- ''अगर हम सोचेंगे कि हम इस संसार में फसें हैं तो एम्पेरुमान की कृपा के पात्र हैं और अगर हम सोचेंगे कि हम इस संसार में खुश हैं तो एम्पेरुमान की लीला के पात्र हैं।''

२) जब पारतंत्रिय का मतलब किसी ने पूछा तब पेरियवाच्चान पिळ्ळै जवाब देते हैं कि एम्पेरुमान की शक्ति पे निर्भर होकर, सभी उपायान्तर (स्वयं प्रयास के साथ) को छोड़े और भगवत कैंकर्य मोक्ष के लिए तड़प रहे तो उसे पारतंत्रिय कहा जाता है।

३) किसी ने पूछा - स्वामी, उपाय क्या है? क्या उपाय मतलब सब कुछ छोड़ देना होता है या उन्हें पकड़ लेना होता है। तब पेरियवाच्चान पिळ्ळै जवाब देते हैं कि उपरोक्त दोनों भी उपाय नहीं है। एम्पेरुमान ही हैं जो हमे सभी विषयों से छुडाके उन्हें ही पकड लेने का ज्ञान दे रहे हैं। इसलिए एम्पेरुमान ही उपाय हैं।

४) पेरियवाच्चान पिळ्ळै के एक रिश्तेदार चिंतित थी और जब चिंता का कारण पूछा गया तो वह जवाब देती हैं कि न जाने कितने समय से इस संसार में वास कर रही है और कर्म बहुत इक्कट्ठा कर चुकी है ऐसे में एम्पेरुमान कैसे मोक्ष प्रसाद करेंगे। इसके लिए पेरियवाच्चान पिळ्ळै जवाब देते हैं कि हम एम्पेरुमान के वस्तु हैं और बिना किसी कर्म का लिहाल किये वह हमें ले जायेंगे।

५) जब एक श्रीवैष्णव दूसरे श्रीवैष्णव के दोषों को देख रहा है, तब पेरियवाच्चान पिळ्ळै कहते हैं कि यमराज अपने सेवक से श्रीवैष्णव के दोषों को ना देखकर उनके दूर जाने का आदेश देते हैं, अम्माजी कहती हैं ''न कश्चिन् न अपराध्यति'' - दूसरों के दोषों को ना देखो। भगवान कहते हैं अगर मेरे भक्त गलती करते हैं वह अच्छे के लिए ही है, आळवार कहते हैं जो कोई भी भगवान के भक्त हैं, वह कीर्तनीय हैं। पेरियवाच्चान पिळ्ळै व्यंग्य रूप से कहते हैं कि अगर किसी को श्रीवैष्णव के दोष की गिनती करनी ही है तो वह अनामक व्यक्ति यही (जो श्रीवैष्णव दूसरे श्रीवैष्णव के दोष गण रहा हैं) हो।

६) भागवत (भगवत भक्त) चर्चा के दौरान, किसी ने एम्पेरुमान के बारे में स्तुति की, तब पेरियवाच्चान पिळ्ळै कहते हैं विशेष विषय के बारे में चर्चा करते समय क्यों सामान्य विषय की चर्चा करे। पेरियवाच्चान पिळ्ळै कहते हैं हर श्रीवैष्णव को अरुळिचेयळ इत्यादि में भाग लेना चाहिए।

पेरियवाच्चान पिळ्ळै तनियन

श्रीमत् कृष्ण समाह्वाय नमो यामुन सूनवे।
यत् कटाक्षैक लक्ष्याणम् सुलभः श्रीधरस् सदा।।

मैं पेरियवाच्चान पिळ्ळै को प्रार्थना कर रहा हूँ जो यामुनर के पुत्र हैं और जिनके कटाक्ष से एम्पेरुमान श्रीमन्नारायण का अनुग्रह सुलभ से मिल सकता है।

उनके श्रीचरण कमलों पे प्रणाम करके, अपने संप्रदाय को उनका योगदान हमेशा याद रखें।

मोतियों का आरती

वेंगमांबा के द्वारा दिये जाने वाली मोतियों का आरती ही उस दिन के लिए अंतिम आरती है। इसलिए 'श्री वेंकटेश्वर के मंदिर में ताल्लपाक वालों की लोरी, तरिगोंड वालों की आरती' प्रसिद्ध बना है। उसके उपरांत न दर्शन होता है, न आरती। ताल्लपाक अन्नमय्या की लोरी सुनते हुए तरिगोंड वेंगमांबा की आरती को स्वीकार कर योगनिद्रा शुरू करते हैं। तत् उपरांत मंदिर के स्वर्ण दरवाजों को सन्निधि ग्वाला बंद करता है।

सितंबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - ९९८९३७६६२५

मेषराशि - शुभकार्यों में तथा विकास के कार्यों में समय-समय पर अवरोध की स्थिति उत्पन्न होती रहेगी। कठिन परिश्रम से शिक्षा में सफलता तथा अभिष्टकार्य की सिद्धि होगी। पारिवारिक दायित्व बढ़ेंगे।

वृषभराशि - स्वास्थ्य सामान्य, मानसिक चिन्ता, पारिवारिक चिन्ता बनी रहेगी। शिक्षा में प्रगति, नौकरी में पदोन्नति, व्यवसाय में लाभ, गृह निर्माण, भूमि क्रय-विक्रय, सामाजिक कार्य एवं पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

मिथुनराशि - समस्त कार्य मन, वाणी-व्यवहार की कुशलता कार्यसिद्धि में सहायक, प्रभाव-प्रताप की वृद्धि, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। रूका हुआ धन वापस होगा। धार्मिक-सामाजिक कार्यों में अभिरुचि उत्पन्न होगी। शिक्षा में प्रगति होगी। इष्टमित्रों के सहयोग से अभिष्टकार्य की सिद्धि होगी।

कर्कराशि - शिक्षा में प्रगति तथा नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य लाभ, मित्रों का सहयोग-समर्थन मिलेगा, पारिवारिक चिन्ता। सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। सहयोगियों से आन्तरिक मतभेद।

सिंहराशि - धार्मिक कार्य एवं सद्गुणों की वृद्धि, मान-सम्मान प्रतिष्ठाओं में वृद्धि। गृहस्थ जीवन सुखी, व्यवसायिक दृष्टि से उत्तम रहेगा। लाभ के अवसरों की वृद्धि। शैक्षणिक उदासीनता। मित्रों का सहयोग।

कन्याराशि - मासफल उत्तम रहेगा। धन-धान्य, नूतन वस्त्र आभूषणादि वस्तुओं की प्राप्ति। सद्विचारों का उदय होगा। मास के उत्तरार्ध में शारीरिक कष्ट। लेनदेन क्रय-विक्रय आदि कार्यों में धोखाधड़ी की सम्भावनाएँ विशेष है अतः सावधानी पूर्वक कार्य करना लाभप्रद रहेगा।

तुलाराशि - मासफल सामान्य रहेगा। नौकरी प्राप्ति, शिक्षा में प्रगति होगी। व्यवसाय में लाभ, इष्टमित्रों के सहयोग से अभिष्टकार्य की सिद्धि होगी। विपक्षी प्रबल होंगे। सुखद देश की यात्राएँ होगी। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा।

वृश्चिकराशि - शिक्षा में प्रगति तथा नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। दाम्पत्य सुख, स्त्री प्राप्ति, सन्तान प्राप्ति, स्वजनों के सहयोग से अभिष्ट कार्य की सिद्धि होगी। सामाजिक कार्य एवं पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

धनुराशि - मासफल मध्यम है। शारीरिक कष्ट, मानसिक चिन्ता, पारिवारिक चिन्ता, आर्थिक चिन्ता बनी रहेगा। स्वजनों तथा इष्टमित्रों से मतान्तर की स्थिति बनी रहेगी। यात्रा का योग बन रहा है। गृह में दुर्गसप्तशति का पाठ करना या कराना लाभप्रद रहेगा।

मकरराशि - कार्य क्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, सामाजिक कार्यों में प्रगति, सुखद समाचार की प्राप्ति, स्वजनों से अनुकूलता, राजकीय पक्ष का सहयोग, अधिकार क्षेत्र का विकास। कठिन परिश्रम से शिक्षा में सफलता नौकरी की प्राप्ति।

कुम्भराशि - लेनदेन क्रय-विक्रय आदि कार्यों में धोखाधड़ी की सम्भावनाएँ विशेष है अतः सावधानी पूर्वक कार्य करना लाभप्रद रहेगा। स्वास्थ्य में न्यूनता आयेगी। मनोरंजन का अवसर मिलेगा। अनावश्यक वाद विवाद तथा रोगादि में धन व्यय की स्थिति बनी रहेगी।

मीनराशि - नौकरी व्यवसाय में सफलता, धनागम मान-सम्मान पद प्रतिष्ठा में वृद्धि। गृहस्थ जीवन सुखी। अनावश्यक वाद विवादों से बचकर रहे झेलना पड़ सकता है। स्थान परिवर्तन योग, अपनों का सहयोग करें।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : .....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
.....
पिनकोड .....
मोबाइल नं .....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. शुल्क :

६. शुल्क का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नहीं है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाओं और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Special Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का
वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२०२० सितंबर
१९ से २७ तक

२६-०९-२०२० शनिवार
रात - अश्ववाहन

२७-०९-२०२०
रविवार
रात - तिरुच्चि उत्सव
ध्वजावरोहण

designpsivaprasad

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printing on 25-08-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

२७-०९-२०२० रविवार
दिन - चक्रस्नान